 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष १० अंक ३ नवंबर 2016

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये



चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी ॥
किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥
किसु वखर के तुम वणजारे ॥
किउ करि साथु लंघावहु पारे ॥१७॥
गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥
दरसन कै ताई भेख निवासी ॥
साच वखर के हम वणजारे ॥
नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥१८॥ *(पन्ना ९३९)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी अपने मुखारबिंद से रामकली राग में उच्चारण की बाणी 'सिध गोसटि' में अंकित इन पावन पउड़ियों में सिद्धों के साथ हुई विचार-चर्चा के प्रसंग में अपने को उनके द्वारा किए प्रश्न और फिर उस प्रश्न का अपनी ओर से गुरमति सिद्धांत के अनुरूप उत्तर देते हुए मनुष्य मात्र को परमात्मा के मिलाप का मार्ग दर्शाते हैं।

सतिगुरु जी को सिद्धों के प्रतिनिध पूछते हैं कृपा हमको स्पष्ट कीजिए कि आपने किस कारण घर छोड़ा है और क्यों उदासी हुए हो अथवा क्यों संसार-भ्रमण का रास्ता अपनाया है। यह उदासी वेशभूषा पर आपने ठहराव क्यों किया? हमें बताओ कि आपका व्यापार क्या है? किस वस्तु का आप आदान-प्रदान करते हो अथवा आप किस सौदे के व्यापारी हो। वस्तुत सिद्धों के मन-अंतर में यह बात घर किए बैठी हुई थी कि इन्होंने गृहस्थ मार्ग को भी अपनाया हुआ है और ये उदासी भी बने हुए हैं। अत: सिद्ध कहते हैं कि आपके साथ शिष्य भी हैं, आप उनको कैसे पार लगायेंगे? सच्ची बात तो यह है कि सिद्धों के मन में योग अथवा सिद्ध मत के श्रेष्ठ होने के बारे में भ्रम बैठा हुआ है तथा उनके मन में था कि अध्यात्म-मार्ग अपनाने के लिए संसार अथवा गृहस्थ मार्ग से किनारा करना अनिवार्य है। सिद्धों द्वारा उठाये गए प्रश्नों में उनका अपने मत के प्रति यह परिपक्व हो चुका भाव प्रतिबिंबित होता है।

गुरु जी सिद्धों को गुरमति मार्ग दर्शाते हुए स्पष्ट करते हैं कि मैं उनको ढूंढने के लिए जो सच्चे सतिगुरु की तरफ अपना मुख कर चुके हैं (गुरमुखों), अदासी अथवा संसार-यात्री हुआ हूं उन गुरमुखों को मिलने के लिए ही यह उदासी वेशभूषा पहनी है। हम परमात्मा के सदैव स्थिर रहने वाले नाम का व्यापार अथवा लेने-देन करने वाले हैं, क्योंकि जो मनुष्य मात्र सच्चे मार्गदर्शक के द्वारा बताये रास्ते को अपना लेता है वह दूसरे किनारे लग जाता है अथवा वह भवसागर से पार उतर जाता है। दूसरे शब्दों में पक्के तौर पर घर-गृहस्थ छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन प्रभु के साथ मिले हुओं को मिलने के लिए उनके साथ विचार-विमर्श, ज्ञान-गोष्ठि करने के लिए अस्थायी रूप से संसार में घूमना लाभदायक है। 



. . . गुरमुखि पंथ वडा परतापै

जब मानवीय जीवन में से शुभ कर्म समाप्त हो जाएं तो समाज में नफ़रत, झगड़ा, पाप, पाखंड, जात-पात के भेदभाव, खुदगर्ज़ी धक्केशाही, भ्रष्टाचारी आदि फैल जाती है। श्री गुरु नानक पातशाह जी के समय भारतीय समाज की ऐसी हालत बनी हुई थी, जिसका कारण भाई गुरदास जी ने *"करम भ्रिसटि सभि भई लोकाई"* कहकर दर्शाया किया है। मानवता के कर्म तब भ्रष्ट हो जाते हैं जब उसके जीवन में से शुभ कर्म खत्म हो जाएं। धर्म को शुभ कर्मों का स्रोत माना गया है और शुभ कर्म मानवता में से तब खत्म हो जाते हैं जब धर्म का ज्ञान धूमिल होकर मानवीय जीवन को प्रकाशमान करने के समर्थ न रहे। धर्म के ज्ञान का केन्द्र परमात्मा है और जितनी देर तक परमात्मा का स्वरूप और गुण स्पष्ट न हों उतनी देर तक धर्म का ज्ञान जात-पात, वर्ण-विभाजन का कारण बनकर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अधोगति का कारण बना रहता है। यही कारण था कि श्री गुरु नानक पातशाह के आगमन से पूर्व खुद को सर्वश्रेष्ठ प्राचीन संस्कृति बताने वाले धर्म और उनके धर्म-ग्रंथ की मौजूद थे किंतु खलकत रसातल की ओर बढ़ती जा रही थी। तब इस ग्लानि से मुक्ति का मात्र एक ही साधन शेष रह गया था :

सुतिगुर बाझ ना बुझीऐ जिचरु धरे न प्रभ अवतारा। *(वार १:१७)*

इस लिए अकाल पुरख परमात्मा ने श्री गुरु नानक देव जी को जगत में भेजा। श्री गुरु नानक देव जी ने जनमानस की हाहाकार सुनी और जनमानस का उद्धार करने के लिए अपने मिशन में भाई मरदाना जी को अपने साथ ले लिया। गुरु जी जब मानवीय अनेकता में प्रभु की एकता का प्रचार करते, परस्पर मानवीय प्रेम का संदेश देते हुए 'किरत करो, नाम जपो, वंड छको' का उपदेश करते हुए, बाणी उच्चारण करते तब उनके साथ भाई मरदाना जी रबाब बजाते थे।

जन साधारण के उद्धार हेतु श्री गुरु नानक पातशाह द्वारा चलाए गए इस मिशन को भाई गुरदास जी ने नानक निर्मल पंथ और तेज परताप वाला 'गुरमुखि पंथ वडा परतापै' कहा है। श्री गुरु नानक पातशाह ने निर्मल पंथ के महल के दो स्तंभ 'गुरु-संगत' और 'बाणी' के आश्रय से टिकाया। भाई गुरदास जी नानक निर्मल पंथ या गुरमुख पंथ की विलक्षणता को दर्शाते हुए लिखते हैं कि गुरु जी ने चार वर्णों में विभक्त मानवता को एक वर्ण अर्थात् साधसंगत का रूप दिया, जिसके तहत सदियों बाद भारत वासियों को एक साथ बैठने की तहज़ीब आई। छ: भारतीय दर्शनों (न्याय, सांख, वेदांत, योग, वैशेशिक, मीमांसा) के मुकाबले गुरमति दर्शन (गुरु साहिब की विचारधारा) सूरज की भांति स्थापित हुई। क्योंकि भारतीय मानवता में जो अज्ञानता का अंधकार छ: दर्शन दूर नहीं कर पाए वह गुरमति दर्शन ने कर दिखाया। जोगियों के बारह पंथों को मिटा कर गुरमुख पंथ तेज प्रताप वाला पंथ बना। यह नानक निर्मल पंथ (सिक्ख धर्म) वेदों-कतेबों से विलक्षण एवं अद्वितीय धर्म है, क्योंकि यह कर्मकांडों का खंडन करके शबद द्वारा प्रभु-परमात्मा

की भक्ति का मार्ग दर्शाता है :

चारि वरनि इक वरनि करि वरन अवरन साधसंगु जापै।
छिअ रुती छिअ दरसना गुरमुखि दरसनु सूरजु थापै।
बारह पंथ मिटाइ कै गुरमुखि पंथ वडा परतापै।
वेद कतेबहु बाहरा अनहद सबदु अगंम अलापै।. . *(वार २३:१९)*

इष्ट की स्पष्टता के बिना भक्ति सार्थक नहीं हो सकती। मानवता के समक्ष आज तक किसी ने परमात्मा का सही स्वरूप प्रकट ही नहीं किया था। श्री गुरु नानक पातशाह ने मूल-मंत्र द्वारा परमात्मा के गुणों के बारे में बताते हुए कहा है कि इन गुणों को याद कर हृदय में धारण करने से शुभ गुणों के धारक बना जा सकता है। *"एक महि सरब सरब महि एका"* द्वारा बताया है कि समस्त सृष्टि एक निरंकार के अंदर समाई हुई है और निरंकार सबके अंदर समाया हुआ है।

नानक निरंकारी जोत की दस पातशाहियों द्वारा नानक निर्मल पंथ के विकास के समय पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी को आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में स्थापित किया, श्री गुरु गोबिंद सिंघ के समय गुरु-संगत ने खालसा पंथ का रूप धारण किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय श्री गुरु नानक पातशाह द्वारा बख़्शिश 'गुरु संगत' तथा 'बाणी' के आश्रण को गुरु-ग्रंथ और गुरु-पंथ के रूप में गुरुआई बख़्शिश कर सिक्खों को इसके ताबिआ किया। कुछ समय के बाद जब सिक्खों में सिक्खी जीवन-जांच के प्रति कुछ निठल्लापन आया तो गुरु-पंथ ने गुरुआई की युक्ति का अधिकार प्रयोग करते हुए गुरबाणी, गुरमति सिद्धांतों और गुरु-इतिहास का गहन अध्ययन कर सिक्ख रहित मर्यादा को निर्धारित किया। सिक्ख रहित मर्यादा हम पर गुरु-पंथ का बहुत बड़ा उपकार है। यह *"सोई करे जोई मनि भावै"* वाली मनमुख वृत्ति को त्यागकर को *"पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै"* वाली सशक्त गुरमति जीवन-जांच की ओर प्रेरित करती है। जिस तरह श्री गुरु नानक पातशाह ने अपने समय में समाज में आ चुकी गिरावट को गुरबाणी के क्रांतिकारी संदेश द्वारा दूर किया था, उसी तरह आज हमने अपनी कमज़ोरियों को खुद देखकर गुरबाणी की शुभ जीवन-जांच को धारण करते हुए शुभ कर्मों के धारणी बनना है। ❋

निहचल नीउ धराईओनु साधसंगति सच खंड समेउ।
गुरमुखि पंथु चलाइओनु सुख सागरु बेअंतु अमेउ।
सचि सबदि आराधीऐ अगम अगोचरु अलख अभेउ।
चहु वरनां उपदेसदा छिअ दरसन सभि सेवक सेउ।
मिठा बोलणु निव चलणु गुरमुखि भाउ भगति अरथेउ।
आदि पुरखु आदेसु है अबिनासी अति अछल अछेउ।
जगतु गुरू गुरु नानक देउ ॥ *(वार २४:१)*

श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाएं : आसा की वार के संदर्भ में

*-डॉ जगजीत कौर**

जगत गुरु पारब्रह्म परमेश्वर स्वरूप श्री गुरु नानक देव जी महाराज का अवतरण राइ भोइ की तलवंडी श्री ननकाणा साहिब (पाकिस्तान) की पावन धरती पर पिता महिता कालू जी के घर माता त्रिपता जी की पावन कोख से सन् १४६९ ई को कुल मानवता के कल्याण हेतु हुआ। समय की परिस्थितियों के अनुसार कुल मानवता अंधेरे अज्ञान में भटक रही थी *"अंधी रयति गिआन विहूणी"* वहमों, भ्रमों, पाखंडों और कर्मकांडों के पुरोहिती जाल में फंसी थीं। भटकती मानवता को *'हउ भालि विकुंनी होई ॥ आधेरै राहु न कोई ॥'* पाखंड जाल से उभरने का मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसे में गुरुदेव नानक जी के रूप में ज्ञान का सुर्योदय हुआ। मिथ्याचार के भ्रम जाल को काटता, चंद्रमा का शीतल प्रकाश मानवता को शांति, सुकून, प्रेम भ्रातृभाव और सद्भावना का मार्ग प्रशस्त करने को उदित हुआ।

गुरुदेव जी के मीठे मधुर बोल उनकी पावन मीठी शिक्षाएं भटकी रय्यत को सत्मार्ग पर ले आई। गुरुदेव जी की पवित्र शिक्षाएं पावन उपदेश उनकी सच्ची बाणी द्वारा अभिव्यक्त हुए, जिनका संकलन पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में है। अकाल पुरख परम पिता परमेश्वर के चरणों से जुड़ गहन अनुभूति के पलों में गुरुदेव जी ने जो भावाभिव्यक्तियां प्रकट कीं वे अनेक रूपों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित हैं। जिनमें आसा राग में रचित 'वार' का विशेष महत्त्व है।

वैसे तो भाई कान्ह सिंघ नाभा के महान कोष के अनुसार वार युद्ध सम्बंधी काव्य रचना है, जिसमें वीर रस में योद्धाओं की शूरवीरता का वर्णन होता है परंतु वार एक छंद विशेष भी है जिसमें 'पउड़ी' छंद में काव्य रचना होती है। गुरु साहिब ने इस छंद विशेष में 'पउड़ी' काव्य विधि द्वारा अकाल पुरख वाहिगुरु जी का ओजमयी प्रशस्ति गायन किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल २२ वारें हैं जो विविध रागों में हैं। इन वारों को गायन करने के संकेत भी धुनियों द्वारा दिए गए हैं। इनमें ९ वारें ऐसी हैं जिन्हें लोक प्रसिद्ध वारों की गायन धुनि (ध्वनि) के आधार पर गायन के संकेत हैं। आसा की वार इन वारों में विशेष स्थान रखती हैं। इसका शीर्षक संपादन कर्ता श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा दिया गया है *"आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥"* असराज बहादुर राजा हुआ जिसे सौतेली माता ने मारने का हुक्म दिया परंतु सेवकों ने उसका केवल एक हाथ काटकर उसे टुंडा कर दिया, मारा नहीं। बाद में वह विजय दुंदभि बजाता बड़ा शासक बना, उसकी प्रशस्ति में वारों का गायन किया गया जिस धुनि पर गायन हुआ उसी की ओर संकेत है।

आसा की वार का मुख्य विषय तो गुरुदेव जी ने वाहिगुरु की सामर्थ्य सत्ता का वर्णन करते हुए जनमानस को पावन संदेश दिया है कि उसे उस समर्थशाली प्रभु-परमात्मा के नाम सुमिरन से जुड़कर सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए इस मानव शरीर को सफल, सार्थक करना है। प्रारंभ में ही बताया गया है कि

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो ९४१२४-८०२६६*

वाहिगुरु अकाल पुरख स्वनिर्मित है, वही समग्र सृष्टि का रचनहार है :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥
(पन्ना ४६३)

निराकार निर्गुण परमात्मा ने स्वयं को रचा और पुन: सगुण रूपता में इस प्रकृति की रचना की, नाम की रचना की। वह सत्य-स्वरूप होने के कारण उस द्वारा रची सृष्टि का कण-कण सत्य है :

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ . . .
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ (पन्ना ४६३)

उस सत्य स्वरूप निराकार प्रभु का नाम ही सत्य है; नर्क तुल्य कष्टों से मुक्ति उसी सत्य स्वरूप के नाम आराधन से होती है।

नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ (पन्ना ४६५)

परमात्मा द्वारा रची सृष्टि सत्य है, निराकार प्रभु का नाम रूप जगत प्रकृति सत्य है तो इसके विपरीत मिथ्या क्या है ऐसा उपदेश गुरु साहिब करते हैं :

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥
(पन्ना ४६८)

अनेकानेक राजा-राजाओं की कथा-कहानियां जो दंत कथाओं में प्रचलित हैं सब मिथ्या हैं, सत्य केवल प्रभु का नाम है :

नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥
केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥
केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥
बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥
गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥
जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥
(पन्ना ४६४)

सात्विक प्रभु का ज्ञान अज्ञानी जीव को केवल सतिगुरु की शरण में आकर ही प्राप्त होता है, इसीलिए आरंभ में बताया गया :

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥ महला २ ॥
जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
ऐते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६२)

सूर्य, चंद्रमा वाह्य प्रकाश प्रदान करते हैं किंतु अंतरमन अंतर्आत्मा को जागृत करने के लिए जिस दिव्य ज्ञान की आवश्यकता है, वह तो केवल सतिगुरु जी ही प्रदान कर सकते हैं। इसीलिए गुरु पर बलिहार जाने का उपदेश गुरुदेव जी करते हैं, पाषाण तुल्य, पशु तुल्य, नृशंस तुच्छ मानव को देव तुल्य बनाने का सामर्थ्य केवल गुरु में है। गुरु प्राप्ति के बिना मनुष्य का जीवन निरर्थक है जैसे दानों से विहीन पौधों को खेत में अपेक्षित भाव से छोड़ दिया जाता है :

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥
(पन्ना ४६३)

सतिगुरु ज्ञान का दाता है। यह चंचल मन जो मानव को संकल्पों, विकल्पों में भटकाता रहता है केवल गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से ही वश में रह सकता है।

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥

गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ *(पन्ना ४६९)*

गुरु से मिलकर ही सत्य से परिचय होता है। अकाल पुरख की कृपा-दृष्टि से सतिगुरु की प्राप्ति होती है। *"नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥"* *"सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ"* *"मूरख सचु न जाणन्ही"* सत्य से परिचय होने से ही सत्य को जानने की जिज्ञासा होती है, सच से प्यार होता है और तब सभी प्रकार के पाप कर्मों की मैल का नाश होता है।

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥
(पन्ना ४६८)

किंतु सत्य का प्रकाश भी तभी हो पाता है जब जिज्ञासु अहंकार मुक्त हो *"हउमै बूझै ता दरु सूझै"* क्योंकि *"हउमै दीरघु रोगु है"* जीव और सत्य के बीच हउमै की दीवार है। हउमै के कारण मानव निज स्वरूप को नहीं देख पाता और विभिन्न बंधनों में बंधा जन्म-मरण, आवागमन एवं अन्य कई प्रकार के कष्टों को भोगता रहता है :

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ *(पन्ना ४६६)*

गुरु शबद की कमाई के लिए जीव का सदाचारी होना ज़रूरी है। इसीलिए परमात्मा ने जीवों की रचना के साथ-साथ धर्म की भी स्थापना की। धर्म मनुष्य को शुभ कर्मों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है, उसमें विवेक शक्ति को उत्पन्न करता है, पाप-पुण्य, सदाचार-अनाचार के अंतर को समझने की सूझ देता है :

नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ *(पन्ना ४६३)*

गुरुदेव जी मिथ्याचार, पाखंड, ठगबाज़ी में व्यस्त जनमानस को शुद्ध पवित्र सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा दे रहे हैं। गुरुदेव जी के उपदेशों से एक तो तत्कालीन आचरण भ्रष्ट समाज का चित्र भी स्पष्ट प्रतिबिंबत होता है और दूसरी ओर शुद्ध आचरणवान बनने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। तत्कालीन समाज का चित्र प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव जी का फरमान है :

माणस खाणे करहि निवाज ॥
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥
तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥
कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥
सरम धरम का डेरा दूरि ॥
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ *(पन्ना ४७१)*

राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर सर्वत्र पाखंड और आचरण हीनता का बोलबाला है :

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥
(पन्ना ४७१)

वाह्य प्रदर्शन और मिथ्या धार्मिक अनुष्ठानों से कुछ संवरने वाला नहीं है, भले ही वह मुसलमान हो या हिंदू। बाहरी दिखावे का बोल

बाला है असलियत तो यह है कि :

लबु पापु दुइ राजा महता कूडु होआ सिकदारु ॥
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥
(पन्ना ४६८)

वास्तविकता यह है कि *"जती सदावहि जुगति न जाणहि"* और *"अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥"* अंतरात्मा मिथ्या तत्व में रची है, बाहरी आडंबर हो रहे हैं इसीलिए तो समाज की मर्यादा भंग हो रही है।

वाइनि चेले नचनि गुर ॥
पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ (पन्ना ४६५)

इसीलिए गुरु साहिब ने अर्थहीन मान्यताओं का विरोध किया; सत्य पर आधारित संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी। समाज में निम्न श्रेणी, नीची जाति मानी जाने वाली मानवता का पक्ष समर्थन किया। स्त्री जाति की निंदा करने वालों का विरोध किया। नारी जाति उसी अकाल पुरख की सृजना है जिसने पुरुष जाति का सृजन किया है, अत: वह निंदनीय नहीं है। जाति-पाति, भेदभाव से दूर सत्य, दया, संतोष, संयम धारण करने की प्रेरणा दी। इसीलिए उस यज्ञोपवीत की निरर्थकता बताई जिसे धारण करने से जाति अभिमान का प्रदर्शन होता है। यज्ञोपवीत तो ऐसा हो जो दया, धर्म, संतोष के तागो से बुना हो *'दइआ कपाह संतोखु सूतु'* से बना यज्ञोपवीत मानव प्रेम का संदेशवाहक है। समझाया यदि उच्च जाति के हो स्वयं को प्रतिष्ठावान मानते हो तो हउमै गर्व से दूर विनम्र समाज सेवक बनो, उस सिंबल के वृक्ष की तरह नहीं जिसके फल फीके फूल बकबके कंम न आवहि पत्त *"मिठतु नीवीं नानका गुण चंगिआईआं ततु"* मर्यादा में रहना सिखाया। सृष्टि का कण-कण मर्यादा में बंधा है। प्रकृति का का एक-एक तत्व प्रभु के भय में गतिमान होता है :

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥
भै विचि धरती दबी भारि ॥
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥
भै विचि राजा धरम दुआरु ॥
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ . . .
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥
(पन्ना ४६४)

जो व्यक्ति मर्यादा में रहकर अपनी शक्ति-सत्ता, सामर्थ्य का अंधाधुंध भोग करता है, मद में चूर शक्तिहीन का शोषण करता है उसकी क्या स्थिति होती है :

आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥ (पन्ना ४६४)

दूसरों का शोषण कर भोग पदार्थ एकत्रित कर मन चाहे ढंग से उपभोग करते जीव को अंत में जंज़ीरों में बांध यमदूत प्रभु दरगाह में ले गए, जहां उसे उसके दुष्कर्मों का हिसाब समझाया गया। दुष्कर्मों के फलस्वरूप मिले कष्ट

(शेष पृष्ठ १९ पर)

आधुनिक युग में श्री गुरु नानक देव जी की बाणी की सार्थकता

-डॉ. परमजीत कौर*

अज्ञान का नाश करके हृदय में प्रेम तथा सत्य की ज्योति प्रज्वलित करने वाले, जनसाधारण के मसीहा, शांति के पुंज, विनम्रता की मूर्ति, महान वैज्ञानिक श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश उस समय हुआ जब चारों तरफ अधर्म, अहंकार, वैर-विरोध, वहम-भ्रम, छूआ-छूत, झूठ, पाखंड एवं पराधीनता का बोलबाला था। श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों को भ्रम, मोह तथा अज्ञान के अंधकारमयी संकीर्ण जीवन-मार्ग से सत्य के प्रकाशमयी मार्ग पर लाने के लिए सारे संसार में विचरण करते हुए चार उदासियां (प्रचार यात्राएं) कीं तथा १९ रागों में बाणी की रचना करके अपने मधुर वचनों तथा अलौकिक कार्यों द्वारा *"साहिबु मेरा एको है ॥ एको है भाई एको है ॥"* का नारा लगाते हुए संसार के लोगों को एकता के सूत्र में बांधते हुए ऊंच-नीच तथा छूआ-छूत के बंधनों से मुक्त करने का प्रयास किया।

आज मनुष्य भौतिक सुख के पर्याप्त साधनों के होते हुए भी मानसिक शांति की खोज में भटक रहा है। असुरक्षा की भावना तथा मौत का डर संतप्त है। जीवन के मूल्य बदल गये हैं। प्रेम, सच्चाई, एकता तथा भाईचारे की भावना के स्थान पर वैर-विरोध, भ्रष्टाचार तथा नफ़रत का बोलबाला है। ऐसे समय में श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा उतनी ही सार्थक-प्रासंगिक तथा उपयोगी है जितनी १५वीं तथा १६वीं शताब्दी में थी। गुरु साहिब के उपदेश केवल सिक्खों के लिए ही नहीं बल्कि समस्त मानवता के लिए लाभदायक हैं।

वैर-विरोध का आधार मनुष्य का विभाजन है। श्री गुरु नानक देव जी ने मेर-तेर, जाति-पाति के भेद-भाव को छोड़कर सारी मानवता को एक जानने का आदेश दिया है सारे जीव परमात्मा की संतान हैं। सब में परमात्मा की ज्योति का प्रकाश है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना ६६३)

कोई जीव ऐसा नहीं है, जिसमें प्रभु आप न हो :

सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥
(पन्ना १४१२)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार जब कोई मिले, उससे जाति नहीं पूछनी चाहिए, यह देखना चाहिए कि उसके कर्म कैसे हैं :

--जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥ *(पन्ना ३४९)*
--सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

केवल जाति या ऊंच-नीच के आधार पर ही नहीं मज़हब के आधार पर भी कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य से भिन्न नहीं है। मानवता का धर्म सब का सांझा है, वह है प्रभु के नाम का सिमरन :

हमरी जाति पति सचु नाउ ॥

**६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६*

करम धरम संजमु सत भाउ ॥ (पन्ना ३५३)

गुरु जी ने किसी पर भी अपने मज़हब को छोड़ने के लिए दबाव नहीं डाला, केवल भलाई की ओर प्रेरित करते हुए अपने-अपने धर्म में सच्चा तथा पवित्र रहने हेतु उपदेश दिया है। श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा को ही दृढ़ करवाते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने हिंदू पंडितों के धर्म को बचाने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

आज धर्म परिवर्तन का मुद्दा विचाराधीन है। गुरमति से निर्देश लेकर इसका समाधान किया जाना चाहिए। श्री गुरु नानक देव जी ने एक परमात्मा की ही आराधना का आदेश दिया है, उस परमात्मा के बराबर अन्य कोई भी नहीं है।

"इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा।" 'सिध गोसटि' में सिद्धों को समझाया है *"पर घर जोहै हाणे हाणि ॥"*

परमात्मा के बिना किसी दूसरे आश्रय की इच्छा परेशान करती है। मनुष्य मढ़ी, मसाणि, जंत्र-मंत्र आदि के चक्कर में फंस जाता है। गुरु साहिब सुचेत कर रहे हैं :

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ (पन्ना ६३४)

क्योंकि

एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥
अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥ (पन्ना १३४५)

आधुनिक युग में धन प्राप्ति की अंधी दौड़, अहंकार, भ्रष्टाचार, स्वार्थ आदि मनुष्य के संताप के कारण बन गये हैं। धन जीवन के लिए ज़रूरी है किंतु उतना ही सुखदायक है जितना मेहनत से कमाया जाता है। गुरमति में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पदार्थों की प्राप्ति जा उल्लेख आता है। इनमें से धन के लिए 'अर्थ' शब्द प्रयुक्त किया गया है क्योंकि गलत साधनों से एकत्र किया गया धन अर्थ न रहकर अनर्थ बन जाता है। 'अर्थ' में श्री गुरु नानक देव जी जी का 'किरत' सिद्धांत निहित है। 'किरत करना', 'वंड (बांटकर) छकना' तथा 'नाम जपना' सुखी तथा सफल जीवन के आधार हैं। श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा मनुष्य को समाज से तोड़ती नहीं वरन् गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए व्यक्तिगत विकास के लिए प्रेरित करती हुई परमात्मा के साथ जोड़ती है। गुरु साहिब ने गृहस्थ में रहकर मेहनत की कमाई करके उसमें से निर्बल लोगों की सहायता करने का आदेश दिया है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

गुरमति के 'किरत' सिद्धांत में मेहनत की कमाई के साथ-साथ सत्य भी शामिल है। झूठ के गलत मार्ग पर चलते हुए दूसरों के अधिकार का हनन करते हुए, दूसरों को दुखी करके अर्जित किया गया धन कभी सुख नहीं दे सकता। इससे मन तथा तन दोनों अपवित्र हो जाते हैं। गुरु जी के मत में पराया हक मारना हिंदुओं के लिए गाय तथा मुसलमानों के लिए सुअर खाने के बराबर निंदनीय है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

गुरु साहिब समझा रहे हैं कि यदि वस्त्रों पर रक्त लग जाये तो वे अपवित्र माने जाते हैं। रिश्वत लेकर दूसरों का खून पीने वाले का मन कैसे पवित्र हो सकता है :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

आज हमारी कमाई पर झूठ का रंग चढ़ता जा रहा है। आचरण भ्रष्ट होता जा रहा है। गुरु का सिक्ख चाहे व्यापारी हो, दुकानदार हो, डॉक्टर हो, वकील या नौकरी-पेशा अफ़सर हो, शिक्षक हो अपनी किरत कमाई में ईमानदार छल-कपट से रहत होना उसका धर्म है। स्मरण रहे, यदि एक प्रोफेसर या शिक्षक पूरा वेतन तो लेता है परंतु सिलेबस पूरा नहीं करवाता, व्यापारी जानबूझ कर ज़रूरत से अधिक मुनाफा लेता है, डॉक्टर मरीज़ों के ठीक हो जाने के बाद भी उन्हे अस्पताल से छुट्टी नहीं देता या अपने पेशे के प्रति ईमानदार नहीं, दुकानदार मिलावट करता है या कम तोलता है, सरकारी या प्राईवेट दफ्तरों में कार्यरत लोग समय का दुरुपयोग करते हैं तो वे किरत के सिद्धांत का पालन नहीं कर रहे। ऐसी कमाई में से धर्म कार्यों के लिए निकाला गया दसवां अंश भी फलदायक नहीं होता।

बांटकर छकने का अर्थ केवल लंगर लगवा देना नहीं है। निर्बल लोगों की हर तरह से सहायता करनी उन्हें सक्षम करना है। गुरु साहिब के सिद्धांत पर चलकर गरीबी को दूर करने में सहायता की जा सकती है।

गुरु पातशाह समझा रहे हैं कि सोना-चांदी, धन आदि तुच्छ हैं। इनको एकत्र करके अहंकार करने वाला मनुष्य दुविधा में पड़ा रहता है तथा परेशान होता है :

सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥
साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥
(पन्ना ९३७)

परमात्मा के नाम का सिमरन करना ही मनुष्य के जीवन का उद्देश्य है :

प्राणी एको नामु धिआवहु ॥
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ (पन्ना १२५४)

नाम-सिमरन के बिना जीवन व्यर्थ हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी के मत के अनुसार ऐसे मनुष्य मानों राख से भरी हुई गाड़ियों के समान है, जिनका कोई लाभ नहीं :

जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥
आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥
(पन्ना १०१०)

परमात्मा के नाम के बिना अन्य कोई भी संगी-साथी, कोई भी उद्यम मनुष्य के कल्याण का साधन नहीं बनता।

श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्य को खाने-पीने आदि के सांसारिक सुख को पूर्णत: त्यागकर नाम जपने या सन्यास लेने का उपदेश नहीं दिया। आपने समझाया है कि जिन पदार्थों का सेवन करने से जिन सुखों को भोगने से मन में विकार पैदा हों तथा मन परमात्मा के डर-अदब को भुलाकर गलत रास्ते पर चल पड़े, वे सुख दुखों का कारण बन जाते हैं। इसलिए ऐसे कार्य त्याग देने चाहिए :

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
(पन्ना १६)

इस सिद्धांत का पालन करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा समय व धन की बचत होती है। जिन वस्त्रों को पहनने से मन में बुरे विचार उत्पन्न हों उन्हें पहनने से संकोच करना चाहिए; इसी प्रकार जिन वाहनों के प्रयोग से मन में अहंकार की भावना जागृत हो तथा जो दुख का कारण बनें, वे सुख में बाधक बन जाते हैं :

बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ . .
बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥
जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि

विकार ॥ *(पन्ना १६)*

आज इन सिद्धांतों को जीवन में लागू करने से घटनाओं, दुर्घटनाओं तथा प्रदूषण की समस्या का निराकरण करने में सहायता मिल सकती है।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में प्रकृति के महत्त्व का प्रतिपादन किया है जो कुदरत में कादर को देखता है, वह प्रकृति से प्रेम करता है :

--कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ *(पन्ना ४६४)*
--पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ *(पन्ना ८)*

सांसारिक आनंद लेने तथा स्वादिष्ट पदार्थों विषयों के भोग में इतना लिप्त नहीं होना चाहिए कि परमात्मा को भूल जायें :

रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥
(पन्ना १५)

विषयों के रसों का मोह मन को भटकाता रहता है तथा भटकता हुआ मन परमात्मा के प्रेम का पात्र नहीं बन सकता :

जेता मोहु परीति सुआद ॥
सभा कालख दागा दाग ॥
दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥
दरगह बैसण नाही जाइ ॥ *(पन्ना ६६२)*

यह स्मरण रखना चाहिए कि हमें जो कुछ भी प्राप्त है वह प्रभु की कृपा से प्राप्त है परमात्मा के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। सारी मानवता का एक ही धर्म है, वह है प्रभु के नाम का सिमरन :

एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ *(पन्ना ११८८)*

नाम-सिमरन को सारे कर्मों से अधिक महत्त्व दिया गया है :

करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥
नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥ *(पन्ना १३४५)*

परमात्मा का नाम सुनकर, समझकर तथा सिमरन करके प्रभु के महल में जाया जा सकता है :

सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥
(पन्ना १४७)

आज धर्म को बहुत संकीर्ण बना दिया गया है। केवल कुछ धार्मिक समझी जाने वाली रस्मों, रीति-रिवाज़ों या अंधविश्वासों को ही धर्म समझ लेना ठीक नहीं है। धर्म के बारे अपने दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि भक्ति, प्रेम, सेवा, विनम्रता, संतोष तथा ईमानदारी आदि धर्म के आधारभूत तत्व हैं। आप ने जीवन को सफल बनाने के लिए इन गुणों को धारण करने तथा झूठ बोलना, छल-कपट, ईर्ष्या, निंदा, आदि से छुटकारा पाने की ताकीद की है। प्रभु से मिलने के लिए सत्य के मार्ग पर चलना आवश्यक है। सत्य का रास्ता गुरु के साथ जोड़ता है तथा प्रभु तक पहुंचाता है :

सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥
सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥
(पन्ना ४१९)

गुरु साहिब दृढ़ करवा रहे हैं कि मन वचन कर्म से सत्य के मार्ग पर चलना ही प्रभु की आराधना है, संतोष का जीवन व्यतीत करना ही उसके आगे प्रार्थना करनी है :

तुधनो निवणु मंनणु तेरा नाउ ॥

साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥
सतु संतोखु होवै अरदासि ॥
ता सुणि सदि बहाले पासि ॥ *(पन्ना ८७८)*

आज फोकट कर्म, व्रत आदि ज़िंदगी का हिस्सा बन गये हैं। मनुष्य इस भ्रम में पड़ा हुआ है कि तीर्थ-स्नान, व्रत आदि फोकट कर्मों को करने से पहले किए मंद कर्मों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि इन कर्मकांडों से मन की अपवित्रता दूर नहीं होती। जो झूठ बोलता है वह बाहर पवित्रता आदि कर्मों से अंदर से पवित्र नहीं हो सकता। यदि अंदर लोभ, मोह, क्रोध तथा अहंकार की मैल है तो शरीर को कष्ट देने से, मौन रखने से या शरीर को धो देने से मन कैसे पवित्र हो सकता है :

अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥
मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥
(पन्ना ९०५)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार सत्य को धारण करना व्रत, संतोष रूपी तीर्थ, दया देवता, क्षमा माला तथा प्रभु का ध्यान तीर्थों का स्नान है :

सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥
(पन्ना १२४५)

गुरु की मति लेकर शबद की विचार द्वारा जाति, वर्ण, कुल के बारे में भ्रम दूर हो जाते हैं। वहम, भ्रम, शकुन, अपशकुन, दिन-मुहूर्त, मंत्र-तंत्र, धागे-ताबीज़ आदि के चक्करों से बाहर निकला जा सकता है :

जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥ *(पन्ना ११९८)*

गुरमति के अनुसार चलकर नाम-सिमरन करने वाले के लिए पवित्र आचरण ही तीर्थ स्नान बन जाता है। आज गुरु का सिक्ख कहलवाने वाले को एक अन्य भ्रम पड़ा हुआ है। वह समझता है कि धन के बल से दूसरों से धर्म-कर्म करवाकर वह संसार सागर से पार उतर सकता है तथा सम्बंधियों द्वारा किए गए पुण्य, दान, श्राद्ध आदि का फल उसको मिलता है, लेकिन श्री गुरु नानक देव जी सुचेत कर रहे हैं कि किसी का भेजा हुआ कुछ आगे नहीं पहुंचता। आगे तो मनुष्य को उसका ही फल मिलता है जो वह स्वयं नाम-सिमरन की कमाई करता है तथा दूसरों के कल्याण के लिए धन आदि देता है :

नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥
(पन्ना ४७२)

संक्षेप में कह सकते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक जीवन सम्बंधित आज की सारी समस्यायों का समाधान वैज्ञानिक ढंग से किया है तथा हमें सुख-शांति, प्रेम तथा सांझीवालता का रास्ता दिखलाया है। अधर्म, हिंसा, अन्याय, सदाचारक-गिरावट तथा गरीबी को दूर करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा समय की ज़रूरत बन गयी है। ❁



महान व्यक्तित्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. भगवंत सिंघ**

दुनिया के महापुरुषों, योद्धाओं और शूरवीरों के जीवन का अध्ययन करने के लिए तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सभ्याचारक परिस्थितियों का गंभीर चिंतन करना बहुत ज़रूरी है। समकालीन परिस्थितियां किसी भी व्यक्तित्व के निर्माण पर पूरा प्रभाव डालती हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म के समय दिल्ली के तख़्त पर महीउद्दीन औरंगजेब विराजमान था, जिसने 'आलमगीर' अर्थात् 'संसार-विजयी' का उपनाम धारण किया हुआ था। मुगल सलतनत के ताकतवर हो जाने के कारण भारत में श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही हिंदुओं के हौसले पस्त हो चुके थे। भारत की धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था विदेशी ताकत के दबाव तले आ चुकी थी। राज्य-सत्ता आम लोगों की धार्मिक रस्मों में दख़लंदाजी कर रही थी। प्रमाण है :

--खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
स्रिसट सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥
(पन्ना ६६३)

--गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पाखंडा नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥
(पन्ना ४७१)

अपने गौरवशाली विरसे को भूलकर बहुत ही बुरी हालत से गुज़र रहे हिंदू समाज में समय की हकूमत के जब्र-जुल्म के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति नहीं थी। समय की राजसी हालत में बादशाह औरंगजेब, जिसने अपने भाइयों का कत्ल करवाकर, पिता को कैद करके तख़्त हासिल किया था, ने अपनी राजसी सत्ता का दबदबा बिठाने के लिए प्रजा, खासकर हिंदुओं पर जुल्म ढाने शुरू कर दिये थे। मुहम्मद लतीफ के अनुसार, "उसने हिंदू मंदिरों की बर्बादी करके मूर्ति-पूजा बंद करवा दी, हिंदू तीर्थ-मेले बंद करवा दिए तथा हिंदुओं को सरकारी नौकरियों से जवाब दे दिया गया।

सन् १६९० ई में बादशाह ने शाही एलान जारी किया, जिसके द्वारा हिंदुओं को पालकियों में सवार होने और अरबी घोड़ों पर चढ़ने की मनाही की गई। जितने हिंदू सरकारी नौकर थे सबको हुक्म दिया गया कि वे इस्लाम धर्म धारण कर लें वरना उन्हें नौकरी से जवाब दे दिया जाएगा। जिन्होंने मुस्लिम बनना प्रवान न किया उन्हें सरकारी नौकरी से बर्खास्त किया गया। औरंगजेब ने अपने सारे राज्य में हिंदुओं पर हिंदू होने का जजिया अर्थात् टैक्स नए सिरे से जारी कर दिया। योगियों-सन्यासियों को भारी गिनती में देश-निकाला दे दिया। बेशक मुस्लिम धर्म के लिए उसका जज्बा सच्चा मालूम होता है मगर हिंदुओं के विरुद्ध उसके तुअस्सब पर पक्षपात ने अलग-अलग निवासों में धार्मिक वैर को जन्म दिया।"

(पंजाब का इतिहास, पृष्ठ ३२८-२९)

हिंदोस्तान के ऐसे हालातों में २६ दिसंबर, १६६६ ई को पटना साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के घर माता गुजरी जी की कोख से श्री गोबिंद राय जी का जन्म हुआ। श्री गुरु तेग बहादर साहिब उस समय ढाका में थे। ढाका से

**संपादक, जन साहित, मासिक, भाषा विभाग भवन, शेरां वाला गेट, पटियाला-१४७००१, मो : ९८१४८५१५००*

वापसी पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब पटना होते हुए श्री अनंदपुर साहिब में आ विराजे। श्री अनंदपुर साहिब के पहाड़ी और रमणीय स्थान में श्री गोबिंद राय जी का बचपन गुज़र रहा था। पंडित किरपा राम जो श्री गोबिंद राय जी को संस्कृत पढ़ाते थे, की अगुआई में कश्मीरी पंडितों का एक प्रतिनिधि-मंडल श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में बादशाह के जुल्म के विरुद्ध फरियाद लेकर पहुंचा। गुरु जी ने उनके दुखों को बहुत हमदर्दी से सुना। कश्मीरी पंडितों के साथ गुरु जी की इस बैठक की ख़बर बादशाह के पास पहुंच गई। उसने गुरु जी की गिरफ्तारी का फरमान जारी कर दिए। प्रिं: तेजा सिंघ ने 'सिक्ख इतिहास' में स्पष्ट किया है कि गुरु जी को रोपड़ के नज़दीक गांव मलकपुर रंगड़ा से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने भट्ट वही मुलतानी, सिंधी, खाता बलाउतों के हवाले से लिखा है कि गुरु साहिब को गिरफ्तार करके सरहिंद में रखा गया। बादशाह के अगले हुक्म के अनुसार गुरु जी को दिल्ली में ले जाकर नवंबर, १६७५ ई में शहीद कर दिया गया।

सोचने की बात है कि जब भाई जैता जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब का शीश लेकर श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे तब नौ वर्षीय श्री गुरु गोबिंद राय जी के मन पर क्या गुज़री होगी! एक तरफ शक्ति-सम्पन्न मुगल राज्य-सत्ता का जब्र-जुल्म, दूसरी तरफ लूटी और पिसी जा रही जनता। उस समय गुरु जी ने स्वाभिमान से विहीन हो चुकी जनता को जगाकर जाबिर राज्य-सत्ता के जुल्म से टक्कर लेने का संकल्प लिया होगा। उन्होंने भाई जैता जी को गले से लगाकर कहा--*"रंघरेटा, गुरु का बेटा।"*

गुरु साहिब ने इसी संकल्प को अमली जामा पहनाने का निश्चय कर लिया। उन्होंने शस्त्र-शिक्षा के साथ-साथ साहित्यक, सभ्याचारक और पहनावे की विलक्षणता पर बल देने का काम किया। उन्होंने निश्चय कर लिया कि सिक्खों की अलग पहचान बनाएंगे। उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब में किले बनवाए और अपने सेवकों से बढ़िया घोड़ों व शस्त्रों की मांग की। वहां युद्ध संबंधी नित्य अभ्यास करवाए जाते थे।

१६९९ ई को श्री अनंदपुर साहिब में गुरु जी ने एक विशाल जनसमूह एकत्रित किया। इस समूह का अंदाज़ा अस्सी हज़ार के लगभग लगाया जाता है। लोगों के बैठने पर गुरु जी ने अपनी कृपाण निकाल कर कहा कि यहां कोई ऐसा व्यक्ति है जो धर्म की खातिर अपनी जान न्यौछावर करने के लिए तैयार हो? यह सुनकर सारे समूह में एकदम सन्नाटा छा गया। गुरु जी ने यह मांग तीन बार दोहराई। तीसरी बार की आवाज़ पर लाहौर का भाई दयाराम अपनी जगह से उठा। उसने हाथ जोड़कर अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। गुरु जी उसे पास के एक तंबू में ले गए। खून से सनी और टपकती कृपाण हाथ में हिलाते हुए गुरु जी उस एकत्र जनसमूह के सामने फिर आए और कहा, "क्या यहां कोई और सिक्ख है जो अपनी कुर्बानी देगा?" यह सुनकर दिल्ली (हस्तिनापुर) का भाई धरमदास आगे आया। उसको भी गुरु जी उसी तंबू में ले गए। इसी तरह तीन और सिक्ख एक-दूसरे के बाद खड़े हुए और उन्होंने अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। उनमें से एक भाई मोहकम चंद द्वारिका का, दूसरा भाई साहिब चंद बिदर का था तथा तीसरा भाई हिम्मत राय द्वारिका का था। गुरु साहिब ने इन पांचों को सुंदर पोशाकें पहनाकर एकत्र जनसमूह के सामने पेश किया। उन्होंने इन सिक्खों को खंडे से तैयार किया अमृत छकाया और उन्हें 'पंज पिआरे' (पांच प्यारे) नाम दिया। इसके बाद उन्होंने विस्तारपूर्वक अपने मिशन के बारे में जानकारी दी। जब गुरु जी अपने पांच अजमाए हुए सिक्खों को अमृत छका चुके तब वे खुद हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गए और उन्होंने विनती की कि उनको भी इसी तरह अमृत

छकाएं जैसे उन्होंने इनको छकाया।

गुरु जी के समूचे जीवन इतिहास को खोजने के बाद उनकी शख़्सियत के विभिन्न पहलू सामने आते हैं।

एक महान जरनैल : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक महान जरनैल थे। उनको युद्ध-नीति का गहरा ज्ञान था। श्री अनंदपुर साहिब की किलेबंदी उनकी युद्धनीतिक सोच का प्रमाण है, इसी कारण उन्होंने इतनी बड़ी मुगल सलतनत के साथ टक्कर ली और लाखों की तादाद में आई मुगल फौज के छक्के छुड़ा दिए। युद्ध में उनके कई श्रद्धालु मुसलमानों और हिंदुओं ने भी उनका साथ दिया, बेशक पहाड़ी हिंदू राजाओं ने अपने स्वार्थ के लिए उनका विरोध किया। गुरु जी के योग्य नेतृत्व में सिक्खों ने मुगल फौज का श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय लंबा समय भूखे-प्यासे रहकर मुकाबला किया। मुगल फौज के जरनैलों ने झूठी कसमें खाकर कहा कि यदि गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब छोड़ जाएं तो वे हमला नहीं करेंगे। भूख-प्यास से व्याकुल सिक्खों का हाल देखकर गुरु जी ने दिसंबर १७०४ ई में श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दिया। मुगलई फौज ने कसमें तोड़ कर पीछे से हमला कर दिया। गुरु जी ने युद्धनीतिक ढंग से दुश्मन का डटकर मुकाबला किया। गुरु जी का अथाह नुकसान हुआ। सारा परिवार बिखर गया। दोनों बड़े साहिबजादे अपने हाथों तैयार करके चमकौर की गढ़ी में से मैदान में युद्ध के लिए भेजे जो वैरी के साथ मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। जब पांच सिंघों ने गुरु जी को चमकौर साहिब की गढ़ी छोड़ जाने का हुक्म दिया तब उन्होंने हुक्म मानकर गढ़ी छोड़ दी। कुछ समय बाद अपनी बिखरी हुई शक्ति को पुन: इकट्ठा करके आज के श्री मुकतसर साहिब के स्थान पर मुगल फौज को करारी हार दी।

महान इंकलाबी : गुरु जी ने महान इंकलाबी कार्य किए। ३३ वर्ष की आयु में खालसा पंथ सजाकर दुनिया को एक विलक्षण धर्म दिया। उन्होंने खालसा की विशेष पहचान और नियम स्थापित किए। इस कारण ही खालसा अडोल रह कर बड़ी मुश्किलों का सामना करता रहा है। जात-पात और छूत-छात को समाप्त करने के लिए विभिन्न जातियों, धर्मों एवं वर्णों के व्यक्तियों को खालसा पंथ में शामिल किया। उन्होंने समानता के लिए अमली सुधार किए तथा मसंद-प्रथा में आ चुकी गिरावट के कारण मसंद-प्रथा बंद कर दी।

महान सरवंशदानी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान सरवंसदानी थे। दुनिया के इतिहास में यह एक अनूठी मिसाल है। गुरु जी ने अपना सारा परिवार कौम के लिए कुर्बान कर दिया।

उच्च कोटि के साहित्यकार : गुरु जी ने साहित्य की शक्ति को भांप लिया था, इसलिए आपने उच्च कोटि की साहित्य सृजना की। आपकी ख़्यालों वाली उड़ान और दृष्टांत का मुकाबला नहीं किया जा सकता। आप फारसी, ब्रज, संस्कृत और पंजाबी के महान विद्वान थे। आप सिरमौर 'वारकर्ता' भी थे। 'चंडी की वार' का पंजाबी साहित्य में सर्वोच्च स्थान है। इस वार में गुरु जी ने युद्ध को सुखमयी रूप में पेश करके सिक्खों के मन में उपजते खौफ को खारिज कर दिया। इस वार में गुरु जी ने तीन सदी पहले की औरत को वीरांगना के रूप में पेश करके उसे ऊंचा दर्जा दिया है।

आप साहित्यकारों के भी कद्रदान थे। आपके दरबार में ५२ कवि रहते थे, जिनके द्वारा रचा गया साहित्य अन्य गुरु-साहित्य के साथ श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद सरसा नदी की भेंट हो गया।

संगीतकार : गुरु जी महान संगीतकार भी थे। गुरु जी की बाणियों में से विशेष प्रकार की संगीतक लौ, सौंदर्यात्मक शब्दावली और वीर

रस की अभिव्यक्ति होती है, जिसका आनंद गायन द्वारा और गायन के बिना भी उठाया जा सकता है। आपकी जापु साहिब, अकाल उसतति, बचित्र नाटक, चौबीस अवतार, शसत्र नाम माला, जफरनामा और चंडी दी वार आदि बाणियां प्रसिद्ध हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगीतक बाणियों में से 'चंडी की वार', 'चौपई' और 'सवैये' लोक-प्रचलित बाणियां हैं। गुरु जी के दरबार में और युद्ध के समय सेना में वीर रस का संचार करने के लिए 'चंडी की वार' का गायन किया जाता था।

गुरु जी के कार्यों ने भारतीय दर्शन को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने राज्य-सत्ता के जुल्म के विरुद्ध केवल आवाज़ ही नहीं उठाई बल्कि संघर्ष की अगुआई भी की। यदि उन्होंने मुगल सरकार के जुल्म के विरुद्ध तेग उठाई तो पहाड़ी हिंदू राजाओं द्वारा जनता की लूट-मार के विरुद्ध भी लड़ाई लड़ी। इसी कारण गुरु जी की फौज में केवल हिंदू-सिक्ख ही नहीं बल्कि पीर बुद्धू शाह जैसे मुसलमानों ने भी शामिल होकर जुल्म की अंधेरी को वश में करने की कोशिश की। भाई नबी खां और भाई गनी खां जैसे मुसलमानों ने गुरु जी को 'उच्च दा पीर' बनाकर मुगल फौज के घेरे से बाहर निकाला। यह सब गुरु जी के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक प्रभावों के कारण ही संभव हो सका था। उन्होंने लुटेरों और कट्टरपंथियों के विरुद्ध प्रचार ही नहीं किया बल्कि असली रूप में कार्य करके एक ऐसा मॉडल भी पेश किया जिसको आने वाली पीढ़ियों ने अपना कर राजसी ताकत प्राप्त की। 

श्री गुरु नानक देव जी की . . .

(पृष्ठ १० का शेष)

को कोई सुनने वाला भी नहीं है। मन का अनुसरण करने वाला अज्ञान अंध जीव निर्मोलक मानव जीवन को गंवा कर चला जाता है। इसीलिए गुरुदेव संयमित जीवन जीने वाले आचरणवान व्यक्ति का आदर्श चित्र प्रस्तुत करते हैं :

सेव कीती सतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
वडिआई वडा पाइआ ॥ *(पन्ना ४६६)*

आदर्श मानव एकमात्र सत्य प्रभु की आराधना करते हुए समाज पंथ की सेवा में रहता, संतोषी जीव होता है। मंद कर्मों में प्रविस्ट नहीं होता, निठल्ला नहीं होता, सुकृत कर्म, कमाई करता है, सत्य साधने से जीविकोपार्जन करता है, सीमित संतुलित भोजन से तृप्त रहता है, माया में आसक्त नहीं होता, दुनिया समाज में विचरण करता हुआ अपने कर्तव्यों का संपर्क निर्वाह तो करता है परंतु निष्काम निर्लिप्त भाव से देश, समाज, पंथ परिवार के प्रति फर्ज़ों की पूर्ति करता है। प्रभु परमात्मा की उस पर दया दृष्टि रहती है। प्रभु-बख़्शिश का पात्र बन साधना पथ पर निरंतर चढ़दी कला में रहता है, उस परम ज्योति प्रभु की यश कीर्ति करता स्वयं भी यश को प्राप्त होता *"लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥"* की अवस्था बनी रहती है। *"सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥"* प्रभु भक्तों की चरण-धूलि बन सदैव नित्यनंद को प्राप्त होता है। क्योंकि ऐसे आदर्श मानव को सदैव *"नानक भगता भुख सालाहणु सचु नाम आधारु ॥"* 

परम भक्ति के प्रतीक भक्त नामदेव जी

*-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ**

भक्त नामदेव जी भारत के शिरोमणि संतों में थे, जिन्होंने परमात्मा के सच्चे स्वरूप को जानने और उसे जीवन का आधार बनाने का जो ज्ञान संसार को दिया, वह भ्रम व निराशा के घोर अंधकार में डूबी मानवता को आशा व विश्वास के असीम उजाले में ले आने वाले उत्सव जैसा था। माया-मोह का बंधन इतना प्रबल था कि मनुष्य पतन के गर्त में गहरा डूबता जा रहा था।

लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥
काइआ डूबै केसवा ॥ *(पन्ना ११९६)*

मानवता का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया था। श्री गुरु नानक साहिब ने इस संकट को गंभीरता से पहचाना और सुप्त पड़ी मानवीय चेतना को जाग्रत करने एवं सच की राह दिखाने के लिए संकल्प लिया; जिस हेतु कितने कष्ट सहन कर बाईस वर्ष से अधिक का समय दुर्गम से दुर्गम सुदूर प्रचार-यात्राओं में व्यतीत किया जो सदियों पुरानी निरर्थक परंपराओं और अंध विश्वास से उबारने वाला था। भक्त नामदेव जी भी उसी पंथ के एक आदरणीय संत-भक्त थे जिन्होंने मनुष्य को परमात्मा की शरण मांगने की प्रेरणा दी *"मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥"* इसका सीधा अर्थ था कि एक परमात्मा ही है जो मनुष्य का सहायक और तारणहार है *"पारि उतारे केसवा ॥"* पार उतारने वाले प्रभु को उन्होंने *"बाप बीठुला"* कह कर संबोधित किया ताकि सारी शंकायें मिट जायें कि इसके सम कोई और शक्ति भी है। परमात्मा के प्रति अथाह विश्वास को प्रकट करने वाले भक्त नामदेव जी का जन्म प्रांत महाराष्ट्र स्थित सतारा के नरसी बामनी गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम दामशेट जी और माता का नाम गोनाबाई था। वे तथाकथित छीपा (छींबा) जाति के थे, जिसे अभिजात्य समाज हेय दृष्टि से देखता था। ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में ही उनका विवाह कर दिया गया, उनके चार पुत्र और एक पुत्री थी। भक्त नामदेव जी बालपन अवस्था से ही आध्यात्मिक वृत्ति के थे, देश के प्रमुख स्थानों की यात्रा करते हुए वे पंजाब आये और ज़िला गुरदासपुर के घुमाण नामक स्थान पर बीस वर्ष से अधिक रहे। भक्त नामदेव जी की स्मृति में यहां सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने एक देहुरा बनवाया।

भक्तिकाल का सबसे महान योगदान था मनुष्य को मूर्ति पूजा आदि भ्रमों से निकालकर ईश्वर की सर्वव्यापकता के दर्शन करवाना। धर्म और धर्म स्थानों पर एक खास वर्ग का कब्ज़ा था जो अंध विश्वास फैला कर समाज का शोषण कर रहा था। तथाकथित नीची मानी जाने वाली जातियों के लोगों के लिए मंदिर प्रवेश तक की मनाही थी। परमात्मा और मनुष्य के बीच में पुजारियों, परंपराओं और कर्मकांडों की लंबी कतार थी, जिससे समान्य जन को लगता था कि वह अलभ्य है।

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

भक्त नामदेव जी ने परमात्मा को दीनों, निर्बलों के सहायक के रूप में स्थापित किया जो हर स्थान पर व हर समय लाज रखने के लिए उपस्थित है। यह एक बहुत बड़ी बात थी। उन्होंने कहा कि जो कुछ है परमात्मा ही है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है जो मनुष्य की सहायता कर सके।

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी ने समर्थ परमात्मा और संसार के मध्य सम्बंध को बड़े ही सुंदर उदाहरण से प्रकट किया। उन्होंने कहा कि जैसे धागा एक है और उसमें सैकड़ों मनके पिरो दिए गए हैं और एकत्व स्थापित हो गया है वैसे ही परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त होकर सभी के निकट हो गया है, सभी में व्याप्त हो गया है। यह उदाहरण परमेश्वर को मूर्तियों, अहंकारी पुजारियों और अतार्किक व्यवस्था से बाहर निकालकर जन-जन के मन में निवास देने वाला था। उन्होंने इसे और स्पष्ट करते हुए कहा कि जैसे जल में लहरें भी उठती हैं, फेन बनती है, बुलबुले बनते हैं जो सब दिखते अलग हैं किंतु वे जल ही हैं और अंततः जल ही बन जाते हैं वैसे ही सृष्टि चाहें जितनी भी बहुरंगी, विभिन्न रचना वाली है किंतु वह परमात्मा का ही अंग है। परमात्मा हर विविधता में व्याप्त है। भक्त नामदेव जी कहा कि इस विवाद में पड़ने की आवश्यकता ही क्या है कि परमेश्वर कैसा है।

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥
जल की माछुली चरै खजूरि ॥१॥
कांइ रे बकबादु लाइओ ॥
जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥१॥
(पन्ना ७१८)

जिसे परमात्मा की प्रतीति हो गई है वह व्याख्यान नहीं देता और इसका प्रचार नहीं करता। परमात्मा की महिमा इतनी अपार है कि उसका शब्दों में वर्णन किया ही नहीं जा सकता। यदि कोई इसका प्रयास भी करता है तो वैसे ही होगा जैसे जल में रहने वाली मछली का खजूर के पेड़ पर चढ़ने जैसी हास्यास्पद बात करना। सिक्ख गुरु साहिबान ने भी परमेश्वर की प्रतीत को गूंगे की मिठाई जैसा कहा है, जिसका आनंद तो लिया जा सकता है किंतु वह आनंद अवर्णनीय है। गूंगा कैसे कहे कि मिठाई का स्वाद क्या है। प्रभु-नाम की मिठाई को चखकर भक्त नामदेव जी महापुरुष बन गये और उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई। लोगों की जिज्ञासाओं का उत्तर भक्त जी ने बड़े ही सरल और सहज ढंग से दिया जो मन को गहरे छू लेने वाला था और इसमें मानवता के कल्याण का सार छिपा हुआ है।

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥
री बाई बेढी देनु न जाई ॥
देखु बेढी रहिओ समाई ॥ (पन्ना ६५७)

इस शबद में भक्त नामदेव जी ने गागर में सागर भरने का काम किया है। बड़ी ही सहज और सरल विधि से उन्होंने पड़ोसिन और घर पर छाये छप्पर जैसे प्रतीकों का सहारा लिया जो हर किसी की समझ में आ जाये। जब कोई अपने घर को मज़बूत छप्पर से सुरक्षित कर लेता है तो उसके आस-पास के जानकार लोग स्वाभाविक ही उससे पूछने आते हैं कि यह

छप्पर किस कारीगर ने बनाया है। हर कोई अपने घर की सुरक्षा चाहता है। इसलिए चाहता है कि ऐसा ही छप्पर बनवा ले चाहें इसके लिए उसे दुगनी मज़दूरी ही क्यों न देनी पड़े, क्योंकि ऐसे कारीगर मिलते कहां हैं। छप्पर इस लिए घर का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है जिसके अंदर सब कुछ ढक-छिप जाता है अर्थात् पत बनी रहती है। ऐसे ही मनुष्य का जीवन है जिसकी मर्यादा को यदि ईश्वर ढंक ले तो इससे सुरक्षित और क्या हो सकता है। भक्त जी ने कहा कि परमेश्वर से जुड़े हुए का आत्मिक आनंद देख जब निकटवर्ती लोग उत्सुकता प्रकट करते हैं तो उसे बताया नहीं जा सकता। उसे किसी विधि, धन, कर्मकांड, यज्ञ, हठ आदि से भी नहीं पाया जा सकता। उसे खोजने की भी आवश्यकता नहीं है। वह तो घट घट में व्याप्त है। भक्त नामदेव जी ने उसे पाने का अति सरल मार्ग बताया है जो हर किसी के वश में है।

बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥
लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥ *(पन्ना ६५७)*

श्री गुरु नानक साहिब ने सचेत ही कर दिया था कि जो प्रेम के मार्ग पर चलना चाहता है वही मेरे पास आये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी कहा कि परमात्मा प्रेम-भावना से ही मिलता है। भक्त नामदेव जी ने भी प्रेम की बात की है। उन्होंने कहा कि उस महान कारीगर (परमात्मा) को, जो जीवन की लाज रखने वाला है, मज़दूरी या दुगनी मज़दूरी देने से नहीं पाया जा सकता। उसे तो मज़दूरी के रूप में प्रेम चाहिए। यदि परमात्मा को अपने जीवन का आधार बनाना है तो उससे प्रीति करनी होगी। प्रीति भी ऐसी कि शेष सारे मोह, आसरे, आधार छोड़ कर की जाये। मन निर्लिप्त हो जाये ताकि उसमें परमात्मा की प्रीति ही हो अन्य कुछ नहीं। ऐसी प्रीति तो वह कारीगर जिसे अभी तक दूसरों को आश्रय देने वाला समझ रहे थे, अपना कारीगर (परमात्मा) बन जाता है और वह स्वयं सहायक होकर आ मिलता है। भक्त नामदेव जी ने कहा है कि परमात्मा सर्वत्र रमा हुआ है। वह सभी स्थानों पर है और सभी के अंतर में है। उसको पाने में जो आनंद है, उसका वर्णन नहीं हो सकता जैसे गूंगा अमृत का स्वाद चखने के बाद भी उसे बता नहीं सकता। परमात्मा मिलन से प्राप्त आनंद को भक्त जी ने परमात्मा के गुणों और सामर्थ्य से जोड़ते हुए कहा कि उसकी शक्ति को देखा जा सकता है कि कैसे उसने अथाह जलराशि वाले समुद्र को भी किनारों में बांध रखा है। गुरु-शबद की यह विशेषता है कि इसमें मनुष्य को समझाने के लिए वेद, पुराणों बड़े सरल और आम ज़िंदगी के उदाहरण व प्रतीक लिए गये हैं। दूसरा उदाहरण भक्त जी ने ध्रुव तारे का दिया जिसे परमात्मा ने आकाश में एक स्थान पर स्थिर कर दिया है जो आश्चर्यजनक घटना है और परमात्मा की असीम शक्ति प्रकट करने वाली है। ऐसे गुणों के सागर और शक्ति के स्वामी परमात्मा से मिलने का परिणाम भी अद्‌भुत होता है। भक्त नामदेव जी ने कहा कि मन में बिना किसी तबले के ही सुरताल बजने लगती है और बिना सावन के ही मन घनघोर भावनाओं में भीगने लगता है। परमात्मा मिलन से जीवन में आये सुखद और आश्चर्यजनक परिवर्तनों का वर्णन करते हुए भक्त जी पूर्ण भाव विभोर हो गये। उन्होंने कहा कि तन पावन पवित्र होकर धन्य हो गया। जैसे पारस के स्पर्श से लोहा कंचन

बन जाता है वैसे ही प्रभु मिलन से मनुष्य की वाणी मधुर और बुद्धि निर्मल हो जाती है। मन परमात्मा के प्रेम से भर जाता है और सारी शंकायें नष्ट हो जाती हैं। गुरु से ऐसा ज्ञान प्राप्त होता है कि परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण और विश्वास भरपूर हो जाता है।

भक्त नामदेव जी के मन की सरलता उनकी विनम्रता के साथ मिलकर अधिक निखर उठती है। यह दोनों उनकी वाणी में एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं। उनकी सरलता में विनम्रता और विनम्रता में सरलता के दर्शन सहज ही हो जाते हैं।

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥
(पन्ना ७२७)

भक्त नामदेव जी ने कहा कि पूर्ण समर्पण की भावना के लिए मनुष्य स्वीकार कर ले कि उसमें कोई गुण नहीं हैं और न ही कोई सामर्थ्य है। इसके साथ ही वह यह भी स्वीकार कर ले कि परमात्मा ही उसे घोर अंधकार में राह दिखा सकता है। परमात्मा की इस अपार शक्ति पर बार-बार बलिहार जाते हुए उन्होंने परमात्मा को दयालु, कृपालु और गुणों का अनंत सागर बताते हुए कहा कि वह सर्वत्र व्याप्त है और सर्वत्र सहायक है। वही दाता है, दूसरा कोई दाता इस संसार में नहीं है।

बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥
(पन्ना ७२७)

परमात्मा पर इस भाव विभोर अवस्था में बलिहार जाते हुए भक्त नामदेव जी ने नाम जपने और प्रभु-सिमरन का जो ढंग बताया और उसे समझाया वह भी अद्भुत था जिसे सुनकर, पढ़कर भक्त जी पर उसी भावना से बार-बार बलिहार जाने को मन विह्वल हो उठता है। उन्होंने इसके लिए कपड़ा नापने वाले गज और कैंची के प्रतीक लिए।

मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥१॥
कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥
राम को नामु जपउ दिन राती ॥१॥ रहाउ ॥
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥(पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी ने कहा कि मनुष्य न अपनी जाति न अपने समुदाय को आधार बनाये और समझ ले कि ये उसकी मुक्ति में किसी भी तरह सहायक नहीं हैं। उस समय जाति का गर्व उत्कर्ष पर था और जाति, समुदाय विशेष में जन्म लेते ही कुछ अधिकार अपने आप मिल गए मान लिए जाते थे। इस गर्व के अधीन अन्य जातियों, समुदायों के लोगों का शोषण किया जाता था और उनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता था। भक्त नामदेव जी को स्वयं ऐसे अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ा था जब उन्हें मंदिर से बाहर कर दिया गया था। जाति के अतिरिक्त शक्ति का अहंकार इतना बढ़ा हुआ था कि उनके पंजाब निवास के दौरान जब उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी तो एक स्थानीय राजा ने उन्हें कोई चमत्कार दिखाने को कहा। भक्त जी ने विनम्रता से कहा कि ऐसा करना परमात्मा की आज्ञा और इच्छा के विरुद्ध जाना और उसके नियमों में दख़ल देने जैसा है। राजा ने नाराज़ होकर उन्हें एक मदमस्त हाथी के सामने फिंकवा दिया था। भक्त जी का बाल भी बांका नहीं हुआ और उनके वचन *"प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु जपत भै अपदा टरी ॥"* सत्य साबित हुआ। उनकी सहजता, मन की निर्मलता और दयालुता वैसी ही बनी रही और राजा को

शर्मिंदा होना पड़ा। अहंकारी और पाखंडपूर्ण व्यवहार तोड़ने के लिए उन्होंने सारी पोल खोलते हुए सीधी चुनौती दी।

आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥

(पन्ना ८७४)

भक्त जी ने कहा कि पाखंड, आडंबर अज्ञानियों के लिए हैं। जिसे परमात्मा की महानता का पता चल गया उसे कोई भ्रम में नहीं डाल सकता। ऐसा विश्वास परमात्मा से जुड़ने पर दृढ़ हो जाता है और मन अडोल हो जाता है। उन्होंने कहा कि मन परमात्मा में ऐसा रम जाये कि दिन-रात वह चेतना में रहे। परमात्मा का प्रेम जीवन को अपने रंग से सराबोर कर देता है और मन को इस तरह एकाग्र कर देता है कि सारी भटकन, विचलन और चंचलता समाप्त हो जाती है। मन एक पल भी परमात्मा से दूर नहीं रह पाता। यह सबसे श्रेष्ठ कर्म है *"हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥"* इस श्रेष्ठ धर्म का पालन करने के लिए मन को कपड़ा नापने वाला गज, जिह्वा को कैंची बनाना पड़ेगा। मन से परमात्मा का नाम निरंतर निकलता रहे और जिह्वा पर आता रहे। जैसे कपड़ा बेचने वाला बजाज कपड़ा नापता और कैंची से काट-काट कर देता जाता है और उतना ही व्यापार में उसे लाभ प्राप्त होता है वैसे ही मन से निकल कर जिह्वा पर परमात्मा का नाम आता जायेगा तो जीवन सफल होता जायेगा। जैसे बजाज को अधिक कपड़ा माप कर काटने का लाभ होता है वैसे ही मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम जपने का हो, यह स्पष्ट संदेश देकर भक्त नामदेव जी ने धर्म की बाखूबी रेखांकित किया। जब परमात्मा से मन जुड़ जाये कोई भी सांसारिक लोभ निकट नहीं आ पाता *"सुइने की सूई रुपे का धागा ॥ नामे का चितु हरि सउ लागा ॥"* यह अवस्था प्राप्त होने के बाद सारी सांसारिक प्राप्तियां बेमानी हो जाती है। यह जल में कमल अलेप जैसा हो जाता है। इस अवस्था को भक्त जी ने बड़ी ही साफगोई से बयान किया।

जौ राजु देहि त कवन बडाई।

जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥

(पन्ना ५२५)

परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण का इससे श्रेष्ठ भाव और कोई नहीं हो सकता। श्री गुरु नानक साहिब ने तो कहा इस मार्ग पर चलते हुए यदि शीश भी देना पड़े तो तनिक भी संकोच नहीं करना है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब में तेग लहरा कर शीश मांगे तो एक के बाद एक पांच गुरसिक्ख उठ खड़े हुए थे। इसी भावना को सामाजिक परिस्थितियों के प्ररिप्रेक्ष्य में देखते हुए भक्त नामदेव जी ने कहा कि परमात्मा के अधीन जैसे भी वह रखे रहने में ही प्रसन्नता और यश है। वह चाहें राज्य सिंहासन पर बैठा दे या भिखारी बनाकर भीख मंगवाये, इससे न तो कुछ बढ़ने वाला है न ही घटने वाला है। मन का भाव स्थिर रहेगा।

भक्त नामदेव जी जैसे संतों ने जहां मानवता को सही दिशा और जीव को वास्तविक लक्ष्य दिया वहीं मन की निर्मलता और सरलता के जो आदर्श स्थापित किए उनमें परमात्मा के रूप के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। 

प्रभु-भक्ति में लीन रहने वाले भक्त नामदेव जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

विश्व के महान् ग्रंथ, रूहानियत के सागर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन महान व उच्चकोटि के भक्त साहिबान की बाणी सुशोभित है, उनमें भक्त नामदेव जी का नाम भी प्रमुख है। भक्त नामदेव जी का नाम भारत की भक्ति-लहर के संत-कवियों (संतों) में विशेष व सम्मानीय स्थान रखता है। महान् समाज सुधारक, साहित्यकार, ब्रह्मज्ञानी, श्रेष्ठ संगीतकार और क्रांतिकारी विचारक व दार्शनिक भक्त नामदेव जी का जन्म २६ अक्तूबर, १२७० ई. को पिता दामशेट जी के गृह में माता गोनाबाई जी की कोख में से प्रांत महाराष्ट्र के ज़िला हिंगोली के गांव नरसी बामनी में हुआ था। बचपन से ही भक्त नामदेव जी शांत व साधु स्वभाव के थे। वे संत-जनों की सेवा हेतु सदैव तत्पर व तैयार रहते थे। इस भावना ने लग्न का रूप धारण कर लिया, जो कालांतर में वैराग्य एवं विसक्ति में परिवर्तित हो गई। उनके माता-पिता जी चिंतित भी हुए तथा उन पर गुस्सा भी प्रक्ट किया किंतु उनका मन प्रभु-भक्ति से हटकर दुनिया के बंधनों में, माया के बंधनों में बंधने को तैयार न था। उनका मन हर पल प्रभु-भक्ति में लीन रहता। उनका विवाह श्री गोबिंद शेट की सुपुत्री राजाबाई जी के साथ संपन्न हुआ। उनके गृह में चार पुत्रों एवं एक पुत्री ने जन्म लिया। पुत्रों के नाम थे-- नारायण, महादेव, गोविंद, विट्ठल और पुत्री का नाम था-- लिंबाबाई।

भक्त नामदेव जी के जीवन के साथ अनेक विलक्षण घटनाओं का नाम जुड़ गया था। उनमें से कुछेक घटनाओं का वर्णन उनकी बाणी के अलावा भाई गुरदास जी की वारों में भी मिलता है। उनके पिता श्री दामशेट जी प्रतिदिन परंपरानुसार केशो भगवान के मंदिर में स्थापित मूर्ति को दूध का भोग लगवाया करते थे। एक दिन श्री दामशेट जी को काम के संबंध में गांव से बाहर कहीं जाना था। उन्होंने भक्त नामदेव जी से कहा कि यदि मैं आज जल्दी वापिस न लौट पाया, तो कपिला गाय का दूध लेकर मंदिर में 'भगवान' को भोग लगवा देना। पिता जी के आदेश का पालन करते हुए वे एक कटोरी में दूध लेकर तथा लोटे में जल भरकर मंदिर में पहुंच गए। अपनी श्रद्धा व भक्ति के बल पर भगवान को साक्षात् भोग लगवाकर ही दम लिया और अपने उद्देश्य में सफल हुए। लोग उनकी जय-जय कार करने लगे और उनकी कीर्ति फैलने लगी।

एक बार भक्त नामदेव जी प्रभु-भक्ति में लीन होकर मंदिर में भक्ति कर रहे थे। तथाकथित निम्न जाति का होने के कारण उन्हें मंदिर में से बाहर निकाल दिया गया। रोष-स्वरूप वे मंदिर के पिछवाड़े में बैठकर भक्ति करने लगे और प्रभु को उलाहना दिया कि अगर मुझ से अपनी भक्ति करवानी थी, तो मुझे निम्न जाति में क्यों पैदा किया? प्रभु ने जाति-अभिमानियों, घमंडियों का अभिमान, घमंड चकनाचूर

**बी-एक्स १२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

करते हुए मंदिर का मुंह घुमाकर भक्त नामदेव जी की ओर कर दिया। अत: तथाकथित ऊंची जाति वालों को भक्त जी से क्षमा मांगनी पड़ी।

भक्त नामदेव जी ने मराठी व पंजाबी मिश्रित भाषा में कई शबदों की रचना की। इनमें से १८ रागों में ६१ शबदों को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने बिना किसी भेदभाव के अन्य भक्त साहिबान की बाणी के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित किया। उनकी बाणी संसार के भूले-भटके लोगों को मार्गदर्शन देकर अकाल पुरख के साथ जोड़ती है और सही ढंग से जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा व शिक्षा देती है। बुरे रस्मों-रिवाज़ों को छोड़ गुरमति के अनुसार अकाल पुरख की रज़ा में रहने को प्रेरित व उत्साहित करती है। उनके कथनानुसार सभी मनुष्यों में उस प्रभु-परमात्मा की ही ज्योति विद्यमान है :

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नहीं कोई ॥ *(पन्ना ४८५)*

उनके समकालीन भक्त तरलोचन जी ने उनसे पूछा, "आप स्वयं तो सांसारिक कार्यों में लगे रहते हैं। फिर प्रभु का सुमिरन किस समय करते हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "कार्य तो हाथ-पैरों से मैं करता हूं किंतु मेरा मन उस अकाल पुरख के साथ सदैव जुड़ा रहता है।" जैसे उनका फरमान है :

नामा कहे तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथि पाउ करि कामु सभ चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५)

वे इस नश्वर शरीर के बारे में फरमान करते हैं कि इस शरीर पर अभिमान नहीं करना चाहिए और न ही मंडप, भवनों, महल-मुनारों के साथ ज्यादा प्यार करना चाहिए। भक्त नामदेव जी की बाणी हमें जाति-पाति का दंभ छोड़ने के लिए कहती है। कर्मकांड, बुरे रीति-रिवाज़ों का त्यागकर गुरमति-दर्शन के अनुसार अकाल पुरख की रज़ा में रहकर जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती है। उनकी आध्यात्मिक विचारधारा का यह पड़ाव अति महत्त्वपूर्ण है, जब भारतीय चिंतनधारा से अलग होकर उनकी विचारधारा गुरमति चिंतनधारा का हिस्सा बनती है। भक्त नामदेव जी की बाणी उस समय (तिरहवीं शती) के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक जीवन में फैले पाखंड, आडंबर, दंभ को चुनौती पेश करती है। संकीर्णता, अशांति, वैमनस्य, घृणा के विरोध में भाईचारा, शांति, सद्भावना और प्यार की भावना को बढ़ावा देती है।

प्रभु-भक्ति में लीन रहने वाले भक्त नामदेव जी ने अपनी ज़िंदगी का अंतिम समय (लगभग अठारह वर्ष) पंजाब के ज़िला गुरदासपुर के गांव घुमाण में व्यतीत किया। यहीं पर २ माघ, संवत् १४०६ (सन् १३५० ई) को अकाल पुरख की परम ज्योति में विलीन हो गए। जहां पर भक्त जी की याद में स्थान बना हुआ है। जिस स्थान पर वे तपस्या किया करते थे, उस स्थान पर 'श्री तपिआणा साहिब' सुशोभित है। भट्टीवाल, सक्खोवाल, धारीवाल में भी भक्त जी के जीवन से संबंधित स्थान स्थित हैं। कस्बा घुमाण में प्रत्येक वर्ष २ माघ को भारी जोड़मेला भक्त जी की याद में लगता है। नगर कीर्तन सजाए जाते हैं। कथावाचक, रागी, प्रचारक उनकी बाणी का गुणगान करते हैं। देश-विदेश से भारी संख्या में संगत जोड़मेला में शामिल होती है। हम सभी को भक्त नामदेव जी के उपदेशों पर चलकर आदर्श मानव बनकर विनम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए। परोपकारी कार्यों, मानवता की सेवा में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। 

. . . मुख ते हरि चित मै जुद्धु बिचारै ॥

-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सृजित खालसा पंथ ने हिंदोस्तान तथा हक-सच की रक्षा हेतु जो सुनहरी इतिहास रचित किया, इसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में अन्य कहीं नहीं मिलती। अमन-शांति के समय तो धर्म के रखवाले बनकर बैठना कोई बड़ी बात नहीं होती, मज़ा तो उस समय रखवाले बनने का होता है, जब हक-सच की आवाज़ को दबाया जा रहा हो और धर्म का नाम लेना भी जुल्म समझा जाता हो। जुल्म भी ऐसा जिसकी कोई दाद-फरियाद न हो तथा न्याय की किसी से कोई आशा न हो। मुगल राज्य के समय विशेषत् औरंगज़ेब के समय गैर-मुसलमानों पर अनेक प्रकार की बंदिशें लगा दी गईं एवं तलवार के बल पर गैर-मुसलमानों को ज़बरन मुसलमान बनाया जाने लगा।

ऐसे संकटकालीन समय में जब जुल्म के आगे सारे हिंदोस्तान की जनता थर-थर कांप रही थी, उस समय दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने धर्म को बचाने तथा हक-सच की रक्षा हेतु ज़ालिम हकूमत की ज्यादतियों को अंकुश लगाने के लिए खालसा पंथ की सृजना की। अकाल पुरख ने खालसा पंथ को ऐसा हौसला तथा बल बख़्शिश किया कि शूरवीर सिंघों ने हर जुल्म का मुकाबला अपना सिर तली (हथेली) पर रखकर दुनिया के आगे ऐसे कौतुक पेश किए कि लोग दांतों तले उंगलियां दबाकर सोचने लग गए।

सिक्खों की १२ मिसलों में से शहीदों की मिसल के बानी (प्रवर्त्तक) बाबा दीप सिंघ जी का जन्म १६८२ ई. में श्री अमृतसर परगने के पहूविंड (अब ज़िला श्री तरनतारन) गांव में हुआ। युवा अवस्था में आप खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त कर श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में रहने लगे। जत्थेदार बुड्ढा सिंघ जी भी आप जी के साथी थे।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज चमकौर की जंग के बाद जंगलों में से होते हुए गावों में ठहराव करते-करते तलवंडी साबो पहुंचे तथा इस जगह पर आकर टिक गए और सिक्खों को हुक्मनामे जारी किए, जिस कारण इस जगह का नाम दमदमा साहिब पड़ गया। तलवंडी साबो में आज जहां तख़्त श्री दमदमा साहिब की इमारत बनी हुई है, इस जगह पर गुरु जी दरबार सजाया करते थे। इसी जगह पर माता जी ने पुत्रों की शहीदी का हाल पूछा था। तलवंडी साबो में गुरु साहिब के काफी समय रहने के कारण इस जगह पर कई स्थान गुरु साहिब की यादों से जुड़े हुए हैं तथा दूर-दूरस्थ सिक्ख गुरु साहिब के दर्शनों हेतु इस जगह पर आते हैं। उच्चकोटि के विद्वान, नाम-अभिलाषी, कुर्बानी के पुंज, धर्मी शूरवीर, सिक्ख पंथ के बहादुर जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी भी इस जगह पर गुरु जी के पास रहते थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दक्षिण की यात्रा से पहले दमदमा साहिब तलवंडी साबो ठहरे हुए थे, उस समय उन्होंने इस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप में गुरु-पिता,

*भूतपूर्व अध्यक्ष,शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन: +९१९९१५८-०५१००

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी दर्ज करवाकर नया पावन स्वरूप तैयार करवाया। बाबा दीप सिंघ जी ने इस पावन स्वरूप की प्रतिलिपियां तैयार कीं।

जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दक्षिण यात्रा पर गए तो बाबा दीप सिंघ तथा जत्थेदार बुड्ढा सिंघ जी को दमदमा साहिब में सेवा-संभाल हेतु कार्य सौंपा गया। दमदमा साहिब में सेवा-संभाल करते हुए बाबा दीप सिंघ जी ने एक कुआं लगवाया जो तख़्त साहिब की परिक्रमा में है, जो शहीदों के कुएं के नाम से जाना जाता है। जत्थेदार बुड्ढा सिंघ जी ने बेरियों के वृक्ष लगाए।

दक्षिण से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को अमृत छका सिंघ सजाकर पंजाब भेजा, उस समय बाबा दीप सिंघ जी ने अपने साथी सिंघों सहित बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सहायता की। यह मैदान-ए-जंग में सबसे आगे होकर लड़ते, जिससे शत्रुओं में बाबा जी का इतना दबदबा बैठ गया कि बाबा दीप सिंघ जी का नाम सुनकर ही मैदान से तीतर हो जाते थे तथा इनके जत्थे का नाम शहीदी जत्था प्रसिद्ध हो गया था।

बाबा बंदा सिंघ जी बहादुर की शहीदी के बाद मुगल सरकार द्वारा सिक्खों पर सख़्तियों का दौर चला। ज़करिया ख़ान के समय यह सख़्ती एक भयानक संघर्ष का रूप धारण कर गई। उस समय खालसा पंथ एक जत्थे के रूप में विचरण करता था तथा बाबा दीप सिंघ जी को जत्थे के मुखी सिंघों में गिना जाता था। ज्ञानी ज्ञान सिंघ के अनुसार उस समय जत्थेदार दरबारा सिंघ दीवान, जत्थेदार संगत सिंघ खज़ानची, जत्थेदार हरी सिंघ लांगरी, जत्थेदार भगत सिंघ मोदी, जत्थेदार बुड्ढा सिंघ देसी, जत्थेदार हरदित्त सिंघ, जत्थेदार गरजा सिंघ, जत्थेदार सज्जन सिंघ, जत्थेदार ईशर सिंघ, जत्थेदार ज्ञान सिंघ, जत्थेदार साधू सिंघ, जत्थेदार देवा सिंघ, नवाब कपूर सिंघ, जत्थेदार हरी सिंघ सुखई, बाबा दीप सिंघ, जत्थेदार गुरबख़्श सिंघ (शहीद), जत्थेदार थराज सिंघ, जत्थेदार जस्सा सिंघ, जत्थेदार करम सिंघ, जत्थेदार भोला सिंघ, जत्थेदार अतर सिंघ, जत्थेदार सीहां सिंघ, जत्थेदार बचन सिंघ, जत्थेदार केहर सिंघ, जत्थेदार ब्रज सिंघ, जत्थेदार घनघोर सिंघ तथा जत्थेदार अमर सिंघ आदि मुखी सिंघ थे।

१७३५ई में ज़करिया ख़ान ने श्री अमृतसर के इर्द-गिर्द पहरा लगाकर श्री दरबार साहिब की तरफ जाते सभी रास्ते बंद कर दिए। भाई मनी सिंघ जी को शहीद कर दिया गया तथा जंडियाला के ताल्लुकेदार मस्सा रंघड़ श्री हरिमंदर साहिब का अपमान कर रहा था। उसको सज़ा देने हेतु भाई महिताब सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ को जत्थेदार बुड्ढा सिंघ ने बीकानेर से भेजा। वो आते समय बाबा दीप सिंघ जी के पास दमदमा साहिब ठहरे थे तथा मस्से रंघड़ को उसके किए की सज़ा देने के बाद उसका सिर नेजे पर टांगकर ले जाते हुए वापसी पर भी दमदमा साहिब में बाबा दीप सिंघ जी के पास ठहरे।

जब अदीना बेग के मरने के पश्चात जलंधर सिक्खों के कब्ज़े में आ गया, उस समय बाबा दीप सिंघ जी ने सियालकोट का क्षेत्र मुहम्मद अमीन से फ़तहि करके अपने साथी भाई दयाल सिंघ तथा भाई नत्था सिंघ शहीद को दे दिया, जो शहीद भाई करम सिंघ के समय तक मिसल शहीदां को वार्षिक कुछ-न-कुछ पहुंचाते रहे, किंतु गुलाब सिंघ का सख़्त स्वभाव देखकर वो जागीर गुरुद्वारा बाबे दी बेर के नाम लगवा दी।

अहमद शाह अब्दाली ने जहान ख़ान को सिंघों पर हमला करने के लिए भेजा। दुर्रानियों का ज़ोर देखकर कुछेक सिंघ मालवा की तरफ चले गए। जहान ख़ान श्री अमृतसर में डेरा डालकर बैठ गया तथा श्री दरबार साहिब का अपमान

करने लग गया। श्री अमृतसर का सरोवर मिट्टी से पाट दिया गया। जब बाबा दीप सिंघ जी को इस बात का पता चला तो आपने उसी समय श्री अमृतसर पहुंचकर बदला लेने का फैसला कर लिया। शीघ्र ही अपनी जगह भाई नत्था सिंघ को छोड़कर शहीद होने के इरादे से श्री अमृतसर की तरफ कूच कर दिया। उस समय आप जी के साथ सिर्फ ५०० सिंघों का जत्था था। रास्ते में पास वाले गांवों-- जोगा, दोराज, भुच्चो, गोबिंदपुरा, लक्खी जंगल, बहिमन, माहनवाला, कोट, पंजो के, गुरु चौतरा, फूल, महिराज तथा अन्य सिंघ जत्थे में मिलते गए, इस प्रकार तरतारन साहिब पहुंचने तक उनके साथ पांच हज़ार जंगजू सिंघों का जत्था बन गया। उन्होंने कहा कि जो गुरु-घर के लिए शीश देने के लिए तैयार है वही उनके साथ आए। उनके बुलावे पर पांच हज़ार गुरु के सिंघ शहीद होने के लिए तैयार-बर-तैयार होकर आ पहुंचे। उधर लाहौर के सूबेदार को भी ख़बर मिल गई कि सिक्ख दीवाली के मौके पर श्री अमृतसर एकत्र हो रहे हैं। हाजी अताई ख़ान गशती फौज लेकर सिंघों का नामो-निशान मिटाने के लिए चक्कर काट रहा था। श्री अमृतसर पहुंचकर सिक्खों को दबाने का हुक्म हुआ। उधर से सूबे ने ढोल बजाकर लाहौर में जहाद का एलान कर दिया तथा सभी मोमनों में वंगारा। लाहौर का फौजदार जहान ख़ान दो हज़ार सवार लेकर श्री अमृतसर की तरफ चल पड़ा। सिंघों के आने की ख़बर दुर्रानी को मिल चुकी थी वो भी अपनी फौज लेकर गोहलवड़ के पास आ पहुंचा। दोनों दलों का मुकाबला गोहलवड़ के पास हो गया। घमासान लड़ाई हुई, छः कोस के मध्य लाशें ही लाशें बिछ गईं। ज्ञानी ज्ञान सिंघ के अनुसार "चब्बे गांव के पास शाह जमाल ख़ान और बाबा जी की इतनी भयानक लड़ाई हुई कि बाबा जी सिर तली पर धरकर लड़े तथा श्री अमृतसर पहुंचकर बाबा जी शहीदी प्राप्त कर गए।

बाबा सज्जण सिंघ, बाबा बहादर सिंघ तथा कई अन्य सिंघ गुरु के बाग में लड़ते शहीद हो गए, उनका स्थान बाग में है। बाग की जगह पर आजकल दीवान हाल मंजी साहिब बन गया है। इन शहीदों की याद में मंजी साहिब के पास निशान साहिब झूलता है, जिसके थड़े पर निम्नलिखित सिंघों के नाम लिखे हुए हैं :

१) बाबा दीप सिंघ जी शहीद मुख्य जत्थेदार
२) बाबा बलवंत सिंघ जी शहीद जत्थेदार
३) बाबा हीरा सिंघ जी शहीद जत्थेदार
४) बाबा गंडा सिंघ जी शहीद जत्थेदार
५) बाबा लहिणा सिंघ जी शहीद जत्थेदार
६) बाबा रण सिंघ जी शहीद जत्थेदार
७) बाबा गुपाल सिंघ जी शहीद जत्थेदार
८) बाबा भाग सिंघ जी शहीद जत्थेदार
९) बाबा सज्जण सिंघ जी शहीद जत्थेदार
१०) बाबा बहादर सिंघ जी शहीद जत्थेदार

जब इस लड़ाई के बारे में बाबा गुरबख़्श सिंघ तथा भाई दरगाह सिंघ ने सुना तो वो उसी वक्त श्री अनंदपुर साहिब से दो हज़ार सवार लेकर चढ़ आए तथा वैरियों से लड़ते हुए श्री अमृतसर पहुंच गए। सिंघों को पावन गुरु-स्थान श्री हरिमंदर साहिब को देखकर बहुत रोष और आक्रोश आया। उन्होंने रात को छापे मारकर वैरियों के थाने, तहसीलें जला दिए। सिंघों से मुकाबले के लिए और मुगल फौजें बुला ली गईं तथा सिंघों का नामो-निशान मिटाने का हुक्म दे दिया। शाह नाज़म दीन, सर बुलंद खां, जाबर खां आदि फौजदार २० हज़ार लड़ाकू पठानों को लेकर मैदान में आ गए। उधर जत्थेदार गुरबख़्श सिंघ आदि दुश्मन की चढ़ाई सुनकर धर्म-युद्ध हेतु अरदास करके शहीद होने को तैयार हो गए। सुबह होने तक पठानों की भारी फौज श्री अमृतसर पहुंच गई। श्री अमृतसर

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

गदर लहर में योगदान डालने वाले बाबा लाल सिंघ जी नारंगवाल

-स. सिमरजीत सिंघ*

ज़िला लुधियाना के तहसील जगरावां का गांव है, नारंगवाल। इस गांव में बाबा लाल सिंघ जी का जन्म सन् १८८७ ई. में साधारण किसान परिवार में हुआ था। आपका बचपन भी साधारण किसान के बच्चों जैसा माता-पिता के साथ कृषि-कार्य में हाथ बंटाने में निकला। जब आपने युवा अवस्था में पांव रखा तो उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद लिए अंग्रेज फौज में नौकरी ली। अंग्रेजों की सोच आप को रास नहीं आई और आप नौकरी छोड़ कर गांव वापिस आ गए। गांव आकर आपका मिलाप गांव के प्रसिद्ध चिंतक और देश भक्त भाई रणधीर सिंघ जी से हुआ। भाई रणधीर सिंघ जी की संगत ने आपके मन में देश-प्रेम की भावना भर दी। भाई रणधीर सिंघ जी के पास जो देश भक्त आते थे, उनके साथ बाबा जी की खासी जान-पहचान हो गई। बाबा जी देश-भक्ति के रंग में इतने रंग गए कि हर समय अंग्रेजों को देश से निकालने के बारे में सोचते रहते। आप गदर पार्टी में शामिल होकर देश भक्तों के साथ अपना योगदान डालने लग गए। जब देश भक्तों ने गदर का दिन नियत किया तो बाबा जी भी जत्थे के साथ फिरोज़पुर छावनी के बाहर पहुंच गए, क्योंकि फौजों के बागी हो जाने पर उनका साथ देकर अंग्रेजों को देश से बाहर निकाला जा सके परंतु इस समय मुखबर किरपाल सिंघ के द्वारा अंग्रेजों को सूचना देने पर देश भक्तों की योजना धरी की धरी रह गई। अंग्रेज चौकस हो चुके थे और देश भक्त अपनी योजना में कामयाब न हो सके।

देश भक्तों की मुखबरी शुरू हो गई। गांव-गांव से देश-भक्तों के गिरफ्तार किया जाने लगा। किसी मुख़बर ने बाबा जी की मुखबरी कर दी कि बाबा जी भी गद़र वाले दिन फिरोज़पुर छावनी गए थे। बाबा जी को गांव नारंगवाल से पकड़ लिया गया और लाहौर सेंट्रल जेल में मुकद्दमा चलाया गया। बाबा जी को २० वर्ष की सज़ा सुनाई गई परंतु फौज में नौकरी करने के कारण सज़ा कम करके १० वर्ष कर दी गई। बाबा जी को सज़ा काटने के लिए पहले मुल्तान जेल में भेजा गया और बाद में ६ अन्य साथियों सहित हज़ारी बाग जेल भेज दिया गया। हज़ारी बाग जेल ले जाते समय बाबा जी को रास्ते में बहुत तंग-परेशान किया गया। हज़ारी बाग जेल के आई जी सरदार जीवन सिंघ थे। यह बहुत नम्र स्वभाव के मालिक थे। जेल का दरोगा भी एक नेक इन्सान था परंतु जेल सुप्रिंटेडैंट बहुत ही ज़ालिम स्वभाव का मालिक था। जेल सुप्रिंटेडैंट के सख़्त-स्वभाव के कारण दरोगे ने अपनी बदली करवा ली। नया दरोगा वधावा राम पंजाबी नियुक्त कर दिया गया। दरोगे वधावा राम की श्री अमृतसर के चब्बा गांव में रिश्तेदारी थी, इसके रिश्तेदार को स. सज्जण सिंघ खुखराणा ने मार दिया था। बाबा जी के साथ देश भक्त कैदी आए थे, उनमें से एक का

*उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३

नाम सज्जण सिंघ नारंगवाल था। दरोगे को गलतफहमी हो गई कि उसके रिश्तेदार को इस सज्जण सिंघ ने मारा है, जिसके कारण दरोगा उनके आने-बहाने तंग-परेशान करने में कोई कोर-कसर न छोड़ता था। इन दिनों में पंजाब से १२ और कैदी हज़ारी बाग भेज दिए गए। ये सारे माझा क्षेत्र के थे। इन सिंघों ने एक दिन भाई रणधीर सिंघ जी से आज्ञा मांगी कि जेल तोड़ दें परंतु भाई साहिब ने कहा कि अभी उचित समय नहीं आया, थोड़ी देर इंतज़ार करो। आखिर एक रात सभी ने जेल तोड़कर भागने की योजना बना ली। स. सुच्चा सिंघ और स. नत्था सिंघ ने अपनी कोठड़ियों में सेंध लगाना शुरू कर दिया और अन्य साथियों ने ऊंचे स्वर में पाठ करना आरंभ कर दिया। बाहर आकर इन्होंने स. गंडा सिंघ खापर खेड़ी वाले से सलाह की और पहरेदार को पकड़कर काबू कर लिया। स. सुच्चा सिंघ ने उसकी वर्दी पहन ली और इसकी जगह पहरा देने लग गए। इतने समय में मुख्य वार्डन आ गया। इन्होंने उसको भी पकड़ लिया और उससे चाबियां छीनने की कोशिश करने लगे। मुख्य वार्डन ने चाबियों का गुच्छा घास में बिखेर दिया। आखिर इन्होंने वार्डन को बांध कर बैठा लिया और आप चाबियां ढूंढने लग गए।

इन्होंने चाबियां ढूंढकर १८ कैदियों को खोल दिया किंतु इनसे भाई रणधीर सिंघ जी की कोठी नहीं खुल रही थी। इतनी देर में पुलिस को सूचना पहुंच गई और पुलिस ने खतरे का सायरन बजा दिया। पुलिस को इक्ट्ठा होते देख स. गंडा सिंघ ने सीख जला कर एक ताला पुलिस की तरफ फेंका। पुलिस ने समझा कि बम फेंका गया है, इस लिए सारे पीछे की ओर दौड़ पड़े। मौका देखकर यह १८ फुट ऊंची दीवार पर एक-दूसरे के ऊपर खड़े होकर चढ़ गए। जब ये सारे दीवार पर चढ़ गए थे तो दूसरी तरफ से पुलिस आ गई। स. इंदर सिंघ सेख दौलत (लुधियाना) ने नीचे छलांग लगा दी और पुलिस के हाथ आ गया। पुलिस उसको बेरहमी से पीटने लग गई। यह देख बाबा लाल सिंघ जी को बहुत गुस्सा आ गया और उसने नीचे छलांग लगाते ही एक पुलिस वाले की लाठी छीन ली और पुलिस वालों पर टूट पड़े। पुलिस वाले अरे सिक्ख! अरे सिक्ख!! कहते हुए पीछे की ओर भाग खड़े हुए। इस समय बाबा जी के पांव पर चोट लग गई। १८ सिक्खों में से ७ को बहुत गहरी चोटें लगीं। जब बाबा जी आगे जाने लगे तो बाबा जी का जख़्मी पांव गंदे पानी में पड़ गया और बाबा जी जाने से रह गए। ये पांच सिक्खों जिनको ज्यादा चोटें लगी थी और वे चल नहीं सकते थे, उनको छोड़कर अन्य साथी जंगल में चले गए। दूसरे दिन इनको देखकर कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया तो गांव वालों ने घेरा डालकर इनको पकड़ लिया। यहां से इनको फिर जेल में लाया गया। पुलिस वालों ने बहुत मार-पिटाई की। इनकी सज़ा २-२ वर्ष और बढ़ा दी गई। कुछ समय के बाद बाबा जी को फिर लाहौर जेल में बदल दिया गया। यहां से यह १९३१-३२ में रिहा हो कर गांव नारंगवाल चले गए। यह देश भक्त गांव जाकर उम्र भर पेट की आग बुझाने हेतु गाएं (गौ) चरा कर अपना जीवन बसर करता रहा।



कृतघ्नता

-सतविंदर सिंघ फूलपुर*

कृतघ्न संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसे पंजाबी भाषा में 'अकिरतघण' कहा जाता है। जिसका प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया जाता है जो किसी द्वारा किए गए उपकार को भुला दे।[१] कोशों में इसके सामानार्थी शब्द करीखो, एहसान फरामोश, नमक हरामी तथा पामर[२] आदि भी मिलते हैं।[३]

श्री गुरु नानक देव जी ने किसी का उपकार न जानने वाले कृतघ्न के लिए हरामखोर शब्द प्रयोग किया है : *मै कीता न जाता हरामखोरु ॥* श्री गुरु अरजन देव जी ने ऐसे व्यक्ति के लिए नमक हरामी, गुनहगार, बेगाना, अलपमति आदि शब्द प्रयोग किए हैं।

भाई गुरदास जी ने ऐसे कृतघ्न को नमक हरामी, गुनहगार, बेईमान, अज्ञान, मंदी हूं मंदे कहा है।

गुरबाणी में कृतघ्न शब्द अलग-अलग सात रूपों में आया है :

अकिरतघण : कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते (पन्ना ३१७)

अकिरतघणा : अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥ (पन्ना ४७)

अकिरतघणै : अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥ (पन्ना १०८६)

अकिरतघना : पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥ (पन्ना ५४७)

अकिरतघनारे : तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ (पन्ना ८०९)

अक्रितघणु : बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पाइआ ॥ (पन्ना ५४६)

अक्रितघन : कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभु सहीऐ ॥[४] (पन्ना ५३१)

कृतघ्न एक ऐसा शब्द है जो सिर्फ इन्सान के हिस्से में आया है। आम तौर पर हम कृतघ्न शब्द को दुनियावी एहसान फरामोश व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है किंतु गुरबाणी में यह शब्द जीव की परमात्मा के प्रति कृतघ्नता के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। कृतघ्न व्यक्ति किस हद तक नीचा गिर सकता है, वह परमात्मा, गुरु तथा माता-पिता के प्रति कैसी कृतघ्नता करता है, उसका हश्र कैसा होता है, आदि के बारे विचार करना हमारा उद्देश्य है।

परमात्मा के प्रति कृतघ्नता : जहां कहीं भी कृतघ्न की बात आएगी वहां लाज़मी तौर पर दूसरी धिर द्वारा किया गया उपकार भी होगा। इस लिए मनुष्य की परमात्मा के प्रति कृतघ्नता के बारे में बात करने से पहले उस वाहिगुरु के उपकारों को जानना आवश्यक है। पंचम पातशाह सुखमनी साहिब की चौथी असटपदी में बहुत खूबसूरत ढंग से इन उपकारों का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि माता के रक्त तथा पिता के बिंद के सुमेल से उस परमात्मा ने कितने सुंदर अंग तथा नयन-नक़श बनाकर इस जीव की सृजना की। माता के गर्भ में भोजन की व्यवस्था कर इसकी प्रतिपालना की। फिर जब यह जीव जन्म लेकर धरती पर आया तो अकाल पुरख ने इसके पीने के लिए माता के सीने में शीर (दूध) पैदा कर दिया। युवा अवस्था में भोजन तथा सुखों की

*संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।

समझ बख़्शिश की। जब वृद्धा अवस्था में हाथ-पांव काम करना बंद हो गए तो सेवा करने हेतु साक-सम्बंधी, सज्जन लगा दिए जो बैठे हुए के मुंह में अच्छे भोजन छकाते रहे। इस पूरी असटपदी में तथा समस्त गुरबाणी में परमात्मा द्वारा जीव पर किए गए उपकारों तथा बख़्शिश का बड़े विस्तृत रूप में वर्णन मिलता है। उस कादर ने अपनी कुदरत में असंख्य नियामतें देकर जीव को निवाजित किया है किंतु जो गुणों को न जानने वाला निर्गुण मनुष्य गुरबाणी के कथन: *दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥* के अनुसार उस सृजनहार अकाल पुरख की दातों से ही प्यार डालकर बैठ जाए और देने वाले दातार को मन से विसार दे, वह मनमुख कृतघ्न है : देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ। भाई गुरदास जी ने ऐसे मनमुख को बड़ा कृतघ्न कहा :

मनमुख वडा अक्रितघणु दूजै भाइ सुआइ लुभाई।
सिरजनहार न चिति वसाई ॥ (वार ३७:२३)

ऐसे कृतघ्न के लक्षण तथा हश्र बताते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं :

खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥
तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥१॥
तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥
कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥१॥ रहाउ ॥
साकत की ऐसी है रीति ॥
जो किछु करै सगल बिपरीति ॥२॥
जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥
सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥ (पन्ना १९५)

कृतघ्न मनुष्य को पंचम पातशाह ने नमन हरामी, गुनहगार, बेगाना (परमात्मा से बेगाना) अलपमति (होशी मति वाला) कहा है। क्योंकि जिस प्रभु ने उसको ज़िंदगी, शरीर तथा सुख दिए हैं, उस असल तत्व की वह पहचान नहीं करता। माया के मोह में फंसाकर भटकना में ही सारी आयु बिता देता है किंतु जो दातार पिता सब दातें देने वाला है उसको निमख मात्र भी अपने मन में नहीं बसाता :

लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥
जीउ पिंडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥
लाहा माइआ कारने दह दिसि ढूढन जाइ ॥
देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥
(पन्ना २६१)

जिस मनुष्य को सर्वव्यापक, सृजनहार परमात्मा बिसर जाए, वह सदा विकारों की अग्नि में जलता रहता है। परमात्मा के किए उपकारों को भूलने वाले उस कृतघ्न मनुष्य को कोई नहीं बचा सकता। वह मनुष्य सदा भयानक नर्क में पड़ा रहता है। जिस मनुष्य को परमात्मा ने ज़िंदगी दी, प्राण दिए, शरीर बनाया, धन दिया, मां के पेट में रक्षा कर दया की किंतु कृतघ्न मनुष्य उस परमात्मा के सारे उपकारों को भूलकर, उससे प्रीत त्यागकर अन्य पदार्थों के मोह में मस्त रहता है, वह मनुष्य किसी तरह भी प्रवान नहीं होता :

जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥
जलता फिरै रहै नित ताता ॥
अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥
जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥
मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥
तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥ (पन्ना १०८६)

गुरु के प्रति कृतघ्नता : श्री गुरु नानक पातशाह से लेकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब तक नौं पातशाहियों द्वारा हम पर किए गए उपकारों का लासानी इतिहास हमारे सामने है। दशम पातशाह के समय तो इन उपकारों की अत्यंत बढ़ौतरी हुई। दशमेश पिता जी ने हमारी खातिर अपना सरवंश कुर्बान कर दिया। चारों साहिबज़ादे

कुर्बान करवाने के उपरांत खालसे की तरफ हाथ करके कहा, *"इन पुतरन के सीस पहि वार दीए सुत चार। चार मुए तो किआ हूआ जीवत कई हज़ार।"*

आप जी ने खालसा पंथ साजकर खालसे को अपना 'खास रूप' कहा। अमृत पान करके पांच करारी रहित के धारणी होने की ताकीद की परंतु आज गुरु जी के सारे उपकारों को भूल जाने के कारण सिक्ख परिवारों में फैली नशे एवं पतितता की हवा गुरु के प्रति घोर कृतघ्नता की शिख़र है। जिसे *"अम्रिंत कउरा बिखिआ मीठी ॥"* लगती है ऐसे साकत भी महां कृतघ्न हैं। दशम पातशाह की नज़रों में वह मां भी कृतघ्न है जो अपने पुत्र को कहती है, 'पुत्र! मुझ से तेरे केशों की संभाल नहीं होती, नाई की दुकान पर चल, मैं तेरे केश कटवा लाउं। असल में वह माता सिर्फ अपने पुत्र के केश ही कत्ल नहीं करवा रही होती बल्कि दशमेश पिता तथा माता गुजरी जी के उपकारों व भावनाओं का कत्ल करवा रही होती है। आज केशों पर कैंचियां चलाने वाले अपने उन बुजुर्गों के प्रति भी कृतघ्न हैं, जिन्होंने कभी खोपरियां उतरवाकर सिक्खी केशों-स्वासों संग निभाई थी।

बिपरवादियों की कृतघ्नता : जहां व्यक्तिगत कृतघ्नता की बात आम देखने को मिलती है वहीं कई बार कुछ कौमें भी दूसरी कौम के एहसान को भुलाकर कृतघ्नता का ऐसा बरताव करती हैं, जिसको सदियों तक भुलाना कठिन हो जाता है। बिपरवादियों की उदाहरण इस बात का प्रत्यक्ष सबूत है। दुनिया के इतिहास में मानवता को शर्मसार कर देने वाला कृतघ्नता का नंगा नाच तब प्रत्यक्ष रूप में सामने आया जब गंगू की औलाद बिपरवादियों ने अपने रक्षक श्री गुरु तेग बहादर जी के उपकारों को भुलाकर श्री अकाल तख़्त तथा सर्वसांझीवालता के प्रतीक श्री हरिमंदर साहिब पर तोप, टैकों से हमला करके सैंकड़ों निर्दोष श्रद्धालुओं को शहीद कर दिया। इसके बाद बिपरवादियों ने कृतघ्नता का दूसरा तांडव दिल्ली की सड़कों पर बेखौफ़ होकर किया। इस तांडव में उन्होंने निर्दोष बच्चे, बुजुर्गों तथा नौजवान सिक्खों को गलों मे टायर डालकर ज़िंदा जलाया, जिन्होंने हिंदोस्तान में सिर्फ दो प्रतिशत संख्या होने के बावजूद असंख्य कुर्बानियां करके देश को आज़ाद करवाया था। ऐसी कृतघ्नता की मिसाल दुनिया के इतिहास में अन्य कहीं मिलनी मुश्किल है।

माता-पिता के प्रति कृतघ्नता : माता अनेकों कष्ट सहन करके बच्चे को जन्म देती है। खुद गीली जगह पर सौं कर बच्चे को सूखी जगह सुलाती है। अगर बच्चे को ज़रा-सी भी तकलीफ़ हो तो पूरी रात उसके पास बैठी जागती रहती है। पिता अपना खून पसीना एक करके अपनी औलाद की खातिर कमाई करता है। अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर अच्छी नौकरी-पेशे पर लगवाता है, घर-बार बनाकर देता है। माता-पिता अपने बच्चों की खातिर हर कुर्बानी देने के लिए तैयार रहते हैं। बच्चों के विवाह पर बड़ी खुशी महसूस करते हैं किंतु वृद्ध अवस्था में जिन बच्चों ने बुजुर्ग माता-पिता की बैसाखी (सहारा) बनना होता है, वो माता-पिता के सारे उपकार भुलाकर कृतघ्न हो जाते हैं। उनको बोझ समझने लग जाते हैं, अपने हाथों से बनाए घर में उनको कोई स्थान नहीं मिलता। जिस घर में उन्होंने अपने बच्चों को उंगली पकड़कर चलना सिखाया, लोरियां गाकर सुलाया था, उस घर के दरवाज़े उनके लिए बंद हो जाते हैं। आखिर दुखी माता-पिता को जब वृद्ध-आश्रम में जाकर शरण लेनी पड़ती है तो उस समय उनके दिल पर क्या गुज़रती होगी? इस बात का अनुमान लगाना तो बहुत मुश्किल

है, बस! इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि औलाद की इस कृतघ्नता के आगे सारे कृतघ्न अवश्य छोटे पड़ जाते होंगे। आज वृद्ध-घरों में लगभग दस प्रतिशत कुछ अन्य मज़बूरियां वालों को छोड़कर नब्बे प्रतिशत कृतघ्नों के माता-पिता ही ज़िंदगियां काट रहे हैं, जो समाज के माथे पर बहुत बड़ा कलंक है। भाई गुरदास जी इस संदर्भ में लिखते हैं :

माता पिता अनंद विचि पुतै दी कड़माई होई।
रहसी अंग न मावई गावै सोहिलड़े सुख सोई।
विगसी पुत विआहिऐ घोड़ी लावां गाव भलोई।
सुखां सुखै मावड़ी पुतु नूं दा मेल अलोई।
नुहु नित कंत कुमंतु देइ विहरे होवह ससु विगोई।
लख उपकारु विसारि कै पुत कुपुति चकी उठि झोई।
होवै सरवण विरला कोई ॥ (वार ३७:११)

उपरोक्त वार की तेरहवीं पउड़ी में भाई साहिब लिखते हैं कि ऐसे बेईमान कृतघ्न पुत्र जो परोपकारी माता-पिता के प्यार को बिसार देते हैं, उनका किया हुआ जप-तप, पूजा-पाठ, व्रत, तीर्थ-स्नान सब व्यर्थ है, क्योंकि उनके उपकारी माता-पिता इससे संतुष्ट नहीं हैं फिर उन पर गुरु व परमेश्वर कैसे प्रसन्न हो सकते हैं :

मां पिउ परहरि सुणै वेदु भेदु न जाणै कथा कहाणी।
मां पिउ परहरि करै तपु वणखंडि भुला फिरै बिबाणी।
मां पिउ परहरि करै पूजु देवी देव न सेव कमाणी।
मां पिउ परहरि न्हावणा अठसठि तीरथ घुंमणवाणी।
मां पिउ परहरि करै दान बेईमान अगिआन पराणी।
मां पिउ परहरि वरत करि मरि मरि जंमै भरमि भुलाणी।
गुरु परमेसरु सारु न जाणी ॥ (वार ३७:१३)

उपरोक्त विचारों के बाद यह देखना बनता है कि क्या विश्व में कोई इतनी घटिया चीज़ है जिससे कृतघ्न की तुलना की जा सके। इस संदर्भ में भाई गुरदास जी ने अद्‌भुत दृष्टांत पेश किया है। एक स्त्री ने कुत्ते के मास को शराब में डालकर बनाया। फिर उसको मरे हुए मनुष्य की बदबूदार खोपड़ी में डालकर ऊपर से लहू भरे कप्पड़े से ढंककर चल पड़ी। रास्ते में किसी ने पूछा कि इतनी पलीत (मलीन) वस्तु को ढंककर कहां ले जा रही हो? उसके भ्रम को दूर करने के लिए वह कहने लगी, ढंककर इसलिए ले जा रही हूं कि इस पर कृतघ्न की बुरी नज़र न लग जाए। यदि मलीन चीज़ों को भी अपवित्र कर देने वाली कृतघ्न की नज़र इस पर पड़ गई तो यह भ्रष्ट हो जाएगा :

मद विचि रिधा पाइ कै कुते दा मासु।
धरिआ माणस खोपरी तिसु मंदी वासु।
रतू भरिआ कपड़ा करि कजणु तासु।
ढकि लै चली चूहड़ी करि भोग बिलासु।
आखि सुणाए पुछिआ लाहे विसवासु।
नदरी पवै अकिरतघणु मतु होइ विणासु ॥
(वार ३५:९)

इतना घटिया है कृतघ्न तथा उसकी नज़र। ऐसे कृतघ्न इस धरती पर बोझ हैं। धरती भी इनका भार उठाने से असमर्थ है। किसी ने धरती से पूछा कि तुझ से किस चीज़ का भार नहीं उठाया जाता तो धरती कहने लगी मुझे आसमान छूने वाले ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों का कोई भार नहीं, न ही किले, घरों, समुद्रों, नदियों, फलों से लदे वृक्षों तथा धरती पर चलते फिरते असंख्य जीव-जंतुओं का कोई भार लगता है। फिर वह कौन-सी चीज़ है जिसका भार उससे सहन नहीं होता तो भाई गुरदास जी के अनुसार धरती ने कहा :

भारे भुईं अकिरतघण मंदी हू मंदे ॥(वार ३५:८)

भाई संतोख सिंघ लिखते हैं, जिस तरह परोपकार को पुण्य, दान, तप, यज्ञ सारे शुभ कर्मों से ऊपर माना जाता है, उसी तरह कृतघ्न अनेकों प्रकार के पापों से बुरा है :

पुंन दान तप मख को करिबो, होति न परउपकार समान।
कलमल करनि अनेकनि रीती, क्रितघण के सम कोइ न जानि ॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रासि ३, अंशू ४५)

उपरोक्त विचार से सिद्ध हो जाता है इस दुनिया में यदि सबसे घटिया कोई व्यक्ति है तो वो है कृतघ्न। फिर विचार करना बनता है कि ऐसे कृतघ्न की इस संसार में तथा परमात्मा के दर पर क्या दशा होती होगी? गुरबाणी में जहां कहीं भी कृतघ्न की बुरी दशा व उसकी सज़ा का ज़िक्र आया है, वहां उसकी इस दशा का कारण परमात्मा के प्रति बेमुखताई है। सांसारिक स्तर पर समाज में भी किसी से कृतघ्नता वही करेगा जो परमात्मा से बेमुख है, जिसके हृदय में परमात्मा का भय नहीं। इस लिए गुरबाणी में कृतघ्न की बात परमात्मा के संदर्भ में ही आएगी।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन कथन करते हैं कि परमात्मा के किए उपकारों को न जानने वाला कृतघ्न मनुष्य परमात्मा के चरणों से बिछुड़ा रहता है। प्रभु से पुन: मिलाने के लिए कोई उसका बिचोला नहीं बनता। आखिर निर्दयी यमदूत रूपी मौत उसको आ घेरती है। सारी उम्र प्रभु से बेमुख, माया के मोह में मस्त रहने के कारण अथवा किए की सज़ा भोगता है। गुरु की शरण में पड़कर वह परमात्मा के गुण कभी याद नहीं करता। उसकी सारी उम्र विकारों की तपिश में ऐसे गुज़रती है जैसी जलते-जलते स्तंभ को गले से लगाया हो। काम, क्रोध, अहंकार में फंसकर अपना आत्मिक जीवन लुटा बैठता है। कृतघ्न आत्मिक जीवन की सूझ (समझ) गंवा कर अंतत: पछताता हुआ इस दुनिया से चला जाता है :

बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ ॥
आए खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइआ ॥
पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥
गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थंम्ह गलि लातिआ ॥
काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥
(पन्ना ५४६)

कृतघ्न उस प्रभु द्वारा मारे हुए होते हैं, वो परमात्मा के किए उपकारों को भुलाकर योनियों में भटकते हैं :

--नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥
तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हरामु ॥१॥
(पन्ना ३१५)
--अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥
(पन्ना ७०६)

भाई गुरदास जी इस संदर्भ लिखते हैं कि नमक हरामी (कृतघ्न), गुनहगार होता है, इस लिए प्रभु की दरगाह में वह धड़-धड़ करके ढोल की तरह पीटा जाता है, अर्थात् उसके शरीर पर चोबें पड़ती हैं। ऐसा कृतघ्न इन्सान जन्म-मरण की फासी में फंसकर ख्वार होता है।

--लूण हरामी गुनहगारु धड़ु धंमड़ धड़िआ ॥
(वार ३५:१०)
--लूणहरामी गुनहगार मरि जनमु विगोवै ॥
(वार ३५:११)

भाई कान्ह सिंघ जी नाभा ने गुरमति मारतंड में गुरबिलास की पंक्तियों के अनुसार लिखा है जो अपने स्वामी को रण में पीठ दिखाकर भाग जाए, उस कृतघ्न की इस जहान में निंदा होती है और आगे उसको नरक में निवास मिलता है। ऐसा व्यक्ति इतना अपवित्र होता है कि गीधें भी

उसके मृत मास को नहीं खाती, नमक हराम समझकर छोड़ जाती हैं। आगे परमात्मा के दर पर उसको कोई सुख नहीं मिलता, इस जहान में भी वह अपना यश गंवा कर लज्जित होता है, अपने स्वामी से कृतघ्नता करने के कारण अपने सिर में सात मुठ्ठियां शार (स्वाह) डलवा लेता है अर्थात् घोर बदनामी पाता है :

स्वामी कह जो रन मय त्यागै।
इहां निंद नरक तिह आगै।
तां को मास गीध नहीं लैही ।
निमक हराम जान तज देही।
आगे सुरगु न इहां जस।
सात मुठी तां के सिर भस्स।

कृतघ्न की ऐसी दशा के बारे में पढ़कर मन में एक भय उत्पन्न होता है कि इस जीवन पथ पर चलते हुए कहीं कोई ऐसी खता न हो जाए कि हमारे माथे पर भी कृतघ्नता का दाग लग जाए।

संदर्भ सूची

१. डॉ. रत्न सिंघ, गुरू ग्रंथ विशवकोश, भाग पहला, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००२, पृष्ठ २७
२. पामर शब्द के अर्थ भाई कान्ह सिंघ जी ने किए हैं, पा-मर; रक्षा करने वाले को जो मार दे, कमीना, पाजी, दुष्ट धर्म का वैरी आदि। महान कोश, पृष्ठ ७६४
३. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, नैश्नल बुक्शॉप, १९९८, पृष्ठ ३६, गुरमति मारतंड, भाग पहला, पृष्ठ ३१४
४. डॉ. गुरचरन सिंघ (संपा.) श्री गुरू ग्रंथ कोश, भाग पहला, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००२, पृष्ठ ६८



. . . मुख ते हरि चित मै जुद्धु बिचारै ॥

(पृष्ठ २९ का शेष)

के सरोवर के पीछे की तरफ बहुत भयानक लड़ाई हुई, जिसमें बाबा गुरबख़्श सिंघ, बाबा बसंत सिंघ, बाबा निहाल सिंघ आदि बड़े जत्थेदार शहीद हो गए। दुर्रानियों की फौज पीछे से और आती गई तो सिंघ बसरा के वनों में चले गए तथा दुर्रानी मैदान खाली देखकर श्री अमृतसर में खड़दुंम मचाकर वापस चले गए। श्री अकाल तख़्त साहिब के पीछे की तरफ बाबा गुरबख़्श सिंघ शहीद की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

इस जंग में चाहे बाबा दीप सिंघ जी शहादत पा चुके थे किंतु वो अपना प्रण निभाने में सफल रहे। दुर्रानी की फौजों को चीरते हुए उन्होंने श्री दरबार साहिब के अपमान का बदला लेते हुए अपना शीश गुरु चरणों में भेंट कर दिया :

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥
नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥
(पन्ना १०९४)

बाबा दीप सिंघ जी जंगों-युद्धों के साथ-साथ नाम-सिमरन के भी पक्के अभिलाषी थे। अपने हाथों से गुरबाणी लिखने की सेवा करते हुए दमदमा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की चार प्रतिलिपियां तैयार कीं। उनका मन पूरी तरह बाणी के रंग में रंगा रहता था। वो आम सांसारिक योद्धाओं की तरह अहंकार अथवा क्रोध वश होकर युद्ध नहीं थे करते। युद्ध करते हुए उनकी अवस्था उस तरह की होती, जिसके बारे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने फरमान किया है :

धंनि जीओ तिह को जग मै मुख ते हरि चित मै जुद्धु बिचारै ॥
देह अनित्त न नित्त रहै जसु नाव चढ़ै भव सागर तारै ॥
धीरज धाम बनाइ इहै तन बुद्धि सु दीपक जिउ उजीआरै ॥
गिआनहि की बढनी मनहू हाथ लै कातरता कुतवार बुहारै ॥ *(क्रिशनावतार)*

धार्मिक सूझ एवं सामाजिक समानता : सिक्ख दृष्टिकोण

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

जीवन के उतार-चढ़ाव के मौके पर धर्म व्यक्ति के जीवन में विशेष भूमिका निभाता है। मन में सहज तथा संयम की भावना पैदा कर यह मनुष्य के मन में न तो हउमै की भावना पैदा होने देता है और न ही उसके जीवन में निराशता को प्रवेश करने देता है। जीवन के हर मोड़ पर मार्गदर्शन करने के साथ-साथ यह मनुष्य को सामाजिक एवं धार्मिक जीवन-मूल्यों के साथ जोड़ने का प्रयत्न करता है। धर्म की भावना प्रेम तथा सदाचार पैदा करने के साथ-साथ समानता एवं एकता को कायम रखने में सहायता प्रदान करती है।

समानता का स्वरूप : आदि काल से ही मनुष्य समूह में रहने का आदी है। समूह में तभी आगे बढ़ा जा सकता है यदि परस्पर प्रेम तथा विश्वास कायम रहे। भारतीय परंपरा में सांख्य तथा योग दो महत्त्वपूर्ण धाराएं हैं। सृष्टि की सृजना में ये सतो, रजो तथा तमो गुणों का विशेष योगदान मानती हुई बताती हैं कि जब ये तीनों गुण संयुक्त रूप में कार्य करते हैं तो विकास होता है और जब ये तीनों गुण निष्क्रिय हो जाते हैं तो विनाश का दौर आरंभ हो जाता है। इस प्रकार मनुष्य तभी कोई कार्य सफलतापूर्वक सम्पूर्ण कर सकता है यदि उसका मन और शरीर मिलकर कार्य करें। अगर दोनों में मतभेद हो जाए तो कोई काम सुचारू रूप से पूर्ण नहीं हो सकता। मनुष्य को अपने दोनों पांव से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, जो मिलकर काम करते और एक ही दिशा में चलते हैं तथा मनुष्य की हर प्रकार की मंज़िल तक पहुंचने में सहायता करते हैं। एक पांव से बड़ी मंज़िलें तय करने में मुश्किल पेश आती है, इसीलिए दोनों पांव मनुष्य का रास्ता तय करने में विशेष भूमिका निभाते हैं। ऐसी समानता मनुष्य के जीवन में पैदा होनी चाहिए।

शरीर को सही दिशा में चलाने हेतु मन एवं बुद्धि का विशेष योगदान है। इन दोनों में हमेशा द्वैत भावना बनी रहती है। मन बुराई की ओर ज्यादा उन्मुख होता है. किंतु बुद्धि उसको इसके दुष्परिणामों के प्रति सुचेत करती है। मनुष्य मन के पीछे ज्यादा लगता है और कई बार सोचने का कार्य उस समय करता है जब नुकसान हो जाता है। दोनों में समानता की भावना होना अति अनिवार्य है तभी मनुष्य की दिशा तथा दशा सही व सुचारू रूप में प्रकट हो सकती है। मन और बुद्धि में पैदा हुई समानता शारीरिक क्रियाओं पर सकारात्मक प्रभाव डालकर उसको विकास की दिशा की ओर ले जाती है, परंतु यदि इनमें विरोध पैदा हो जाए तो मनुष्य को विकारों के मार्ग पर जाने से कोई नहीं रोक सकता। मन तथा शरीर की समानता के महत्त्व पर ज़ोर देते हुए श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं :

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥
बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते

**अध्यक्ष, सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

करणी कमाणी ॥
कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥
(पन्ना ९११)

समानता भंग होने के कारण : मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ा होने के कारण धर्म भावनात्मक सांझ पैदा करने में विशेष भूमिका निभाता है। इस कारण जब भी मनुष्य की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचती है तो वह तीखी प्रतिक्रिया करने से गुरेज़ नहीं करता। इससे समाज में बेचैनी तथा अशांति की भावना पैदा हो जाती है। एक-दूसरे लिए खून-पसीना एक करने वाले नज़दीकी व्यक्ति धर्म के नाम पर एक-दूसरे को जान से मारने के लिए उतावले हो जाते हैं। धर्म के नाम पर एक-दूसरे के प्रति तीखी प्रतिक्रिया करने का रुझान उस समय पैदा होता है जब धर्म की भावना जीवन में से मनफी हो जाती है तथा स्वार्थ अधीन झूठ का बोलबाला हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी लोगों के मन में से धर्म की मनफी हुई भावना के कारण पैदा हुई सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति का ज़िक्र करते हुए फरमान करते हैं :

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ (पन्ना १४५)

श्री गुरु नानक देव जी के समय हुई खींचतान का वर्णन करते हुए भाई गुरदास जी फरमान करते हैं :

भई गिलानि जगत्रि विचि चारि वरनि आस्रम उपाए।
दसि नामि संनिआसीआ जोगी बाहर पंथि चलाए।
जंगम अते सरेवड़े दगे दिगंबरि वादि कराए।
ब्रहमणि बहु परकारि करि सासत्रि वेद पुराणि लड़ाए।
खटु दरसन बहु वैरि करि नालि छतीसि पखंड रलाए।
तंत मंत रासाइणा करामाति कालखि लपटाए।
इकसि ते बहु रूपि करि रूपि कुरूपी घणे दिखाए।
कलिजुगि अंदरि भरमि भुलाए ॥ (वार १:१९)

धर्म के नाम पर कड़वापन क्यों पैदा होता है अथवा धर्म के नाम पर ऐसी कौन-सी क्रियाएं की जाती हैं जो मानवता को सदैव के लिए एक-दूसरे का दुश्मन बना देती हैं ? इसके कुछेक प्रमुख कारण इस प्रकार देखे जा सकते हैं :-

१. प्रत्येक व्यक्ति धर्म को अपने-अपने दृष्टिकोण से देखता है। कई बार उसको वही दृष्टिकोण सही लगता है जो उसके बुजुर्गों ने बताया हो, उसकी भावनाओं की पूर्ति करता हो, उसको सामाजिक रुतबा प्रदान करने वाला हो, उसको सामाजिक आदर्श स्थापित करता हो आदि। यह ज़रूरी नहीं कि एक व्यक्ति का धार्मिक दृष्टिकोण दूसरों के लिए भी ठीक हो। जब तक व्यक्ति द्वारा धर्म का एक पक्ष देखा जाता है तो दूसरा व्यक्ति उसका विरोध कर देता है। इससे धार्मिक विरोध की भावना पैदा हो जाती है।

२. बहुत-से ऋषियों-मुनियों, पीरों-पैगंबरों ने धर्म को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। समूह धार्मिक अगुओं द्वारा प्रकट किया गया धर्म का स्वरूप उनके जाने के बाद उनके पैरोकारों के हाथ आ जाता है। पैरोकारों का एक बड़ा काम यह होता है कि वे धार्मिक अगुआ द्वारा पेश किए धर्म के स्वरूप के साथ-साथ उसके जीवन की घटनायों को विचित्र अंदाज़ में पेश करने लग जाते हैं, जो कि धार्मिक अगुओं की शिक्षा के अनुकूल नहीं होती। इस तरह करने से एक धर्म में विश्वास रखने वाले पैरोकार

आपस में उलझ जाते हैं।

३. धर्म के पैरोकार अपने धार्मिक अगुओं की शिक्षाओं को पेश करते समय उनको अन्य धर्मों के अगुओं से श्रेष्ठ साबित करने में लग जाते हैं। इससे समाज में भाईचारक सांझ को ठेस पहुंचती है तथा एक धर्म को मानने वाले लोग दूसरे धर्म के लोगों के सदैव के लिए विरोधी हो जाते हैं।

४. श्री गुरु नानक देव जी ने *"बलिहारी कुदरति वसिआ"* तथा *"दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ"* की पंक्तियों द्वारा परमात्मा के प्रकृति में निवास तथा मनुष्य द्वारा उसके एहसास को प्रकट किया है। गुरु साहिब की ये पंक्तियां मनुष्य की प्रकृति के साथ सांझ स्थापित करने तथा उसमें से परमात्मा के अस्तित्व को अनुभव करके आनंद की अवस्था ग्रहण करने पर ज़ोर देती हैं। मौजूदा समय में हमने प्रकृति का जो हाल किया है वो किसी से छिपा नहीं है। विकास की बुलंदियों तक पहुंचने के लिए हमने प्रकृति का जंगल तबाह करके कंकरीट का जंगल निर्मित कर लिया है। गर्मी के मौसम में जब कोई वाहन खड़ा करना हो तो हम वृक्ष की छाया ढूंढते हैं। वृक्षों को संभालने तथा प्रफुल्लित करने का हमने कभी प्रयत्न नहीं किया। मनुष्य की प्रकृति के साथ सांझ दैवी झोंके प्रदान करती है। दुनिया के बड़े-बड़े कवि कादिर के बाद प्रकृति की सुंदरता बयान किए बिना अपनी रचना अधूरी मानते थे। वेदों तथा अन्य धर्म-ग्रंथों में अग्नि, हवा, पानी, धरती, आकाश आदि प्राकृतिक तत्वों को देवताओं के रूप में सृजित किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी 'पवणु गुरू' तथा 'पाणी पिता' कहकर सत्कारा गया है। प्रकृति के साथ संवाद तथा सांझ मनुष्य को आनंद प्रदान करती है, जैसा कि भाई वीर सिंघ कहते हैं :

वैरी नाग! तेरा पहिला झलका, जद अक्खीआं विच वजदा।
कुदरत दे कादर दा जलवा, लै लैंदा इक सजदा।
(मटक हुलारे, वैरी नाग)

इसी तरह प्रो. पूरन सिंघ प्राकृतिक दृश्यों का व्याख्यान करते हुए कहते हैं :

खाड़ खाड़ चलण विच मेरे सुफ़निआं,
पंजाब दे दरिआ,
पिआर अग्ग इन्हां नूं लग्गी होई,
पिआरा जपु साहिब गाउंदे,
ठंडे 'ते ठारदे, पिआरदे।
(खुल्हे मैदान, पंजाब दे दरिआ)

प्रकृति के साथ पैदा हुआ संवाद मन में शांति, आनंद तथा उल्लास का प्रतीक है। गुरबाणी तथा समूह सिक्ख साहित्य में प्रकृति की घटनाओं तथा वस्तुओं द्वारा मनुष्य को सम्पूर्ण जीवन बसर करने के लिए प्रेरित किया गया है। प्रकृति के पास रहने वाले मनुष्य गुरबाणी के संदेश को अच्छी तरह ग्रहण करके आनंद की प्राप्ति कर सकते हैं परंतु पश्चिमीकरण ने हमें बनावटी जीवन-जाच सिखलाई है तथा हम उसी को जीवन का अंतिम सच मानकर उसी में गलतान होने में फ़ख्र महसूस कर रहे हैं। मनुष्य ने वृक्ष को गमले में लगा लिया है। जैसे गमले का स्थान स्थिर नहीं होता, उसी प्रकार मनुष्य के मन में भी भटकना बनी रहती है। जैसे दरिया नालों का रूप धारण कर गए हैं, उसी प्रकार हमारी सोच भी तंग हो गई है। प्रकृति के साथ हमारा संवाद अब खत्म होता जा रहा है तथा हम इसको बचाने की बजाए इसको खत्म करने में पूरा ज़ोर लगा रहे हैं। निरंतर बढ़ती आबादी तथा प्राकृतिक नज़ारों के कम हो रहे अस्तित्व ने मनुष्य का जीवन नीरस बना दिया

है। आने वाले समय में कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहने वाले संवाद शायद पुस्तकों या फिल्मों में ही रह जाएंगे। अस्थाई ढंग से सर्दी एवं गर्मी पैदा करने वाले उपकरण महंगे एवं सीमित हैं। सीमित अस्थाई ढंगों तथा बढ़ती ज़रूरतों ने मनुष्यों को स्वार्थी बनाया है, जिससे खींचतान एवं बेईमानी की भावना पैदा हुई है। बढ़ती ज़रूरतें हमेशा सदाचारक जीवन-मूल्यों में रुकावट डालती हैं। इस देश में हर एक चुनाव के दृश्य में बिजली, पानी, सीवरेज, सड़क आदि प्राथमिक ज़रूरतें ही अग्रिम श्रेणी में रहती हैं तथा समूह राजनीतिक पार्टियां इनकी पूर्ति हेतु वचनबद्धता दर्शाती हैं। समझ नहीं आता कि सीमित प्राकृतिक ढंगों को स्रोतों प्रत्येक मनुष्य तक किस तरह पहुंचा सकते हैं! ये ऐसे मामले हैं जो समाज में बेचैनी की भावना पैदा कर देते हैं।

५. मनुष्य के प्रकृति के साथ खत्म हुए संवाद ने उसके जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रभाव डाला है। प्राकृतिक घटनाएं मनुष्य को आदर्श जीवन-जाच की ओर प्रेरित करती हैं। चींटी को विनम्र, हाथी को अहंकार, लोमड़ी को मक्कार आदि चिन्हों द्वारा संबोधित किया जाता है। इस संबोधन में मनुष्य का प्रकृति तथा उसकी वस्तुओं के साथ सांझ का वर्णन मिलता है। मनुष्य की प्रकृति के साथ सांझ टूटने के कारण उसकी दूसरे मनुष्यों के साथ सांझ भी सीमित हो गई है। अब एक-दूसरे के पास जाकर सुख-दुख सांझे करने की बजाए सोशल मीडिया का सहारा लिया जाता है। कहा जाता है कि मन की बातें दूसरों के साथ सांझी करने से मनुष्य के जीवन में से मानसिक परेशानियां कम हो जाती हैं। इसी कारण कहा जाता है कि दुख सांझे करने से कम होते हैं और खुशियां बांटने से बढ़ती हैं। सोशल मीडिया चाहे इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है किंतु इसके जरिए सारी बातें दूसरों के साथ सांझी नहीं की जा सकती। मनुष्यों में कम हो रहे संवाद ने उसके सामाजिक तथा सदाचारक जीवन पर प्रभाव डाला है। मनुष्य की आदर्शवादी शख़्सियत निजवाद का रूप धारण कर गई है जिसमें मनुष्य का अपने से छोटे लोगों के लिए प्यार और बड़ों का सत्कार मनफी हो गया है। अध्यापक एवं धार्मिक तथा सामाजिक अगुआ किसी समय समाज में सत्कार का पात्र माने जाते थे, किंतु अब इनका सम्मान तथा सत्कार शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं तक ही सिमटकर रह गया है। अध्यापकों का सत्कार भी दिखावा-मात्र केवल वही शिक्षार्थी करते हैं जो उनके साथ सीधे रूप से सम्बंधित हैं तथा जिन्होंने उनकी एसेसमेंट लगानी हो अथवा ग्रेस मार्क्स देने हों। ऐसा बिलकुल नहीं है कि समूह शिक्षार्थियों को एक ही श्रेणी में रखकर देखा जाए। जहां माता-पिता या अन्य बुजुर्गों का बच्चे के मन पर प्रभाव होता है, वहीं बच्चे की शख़्सियत में सदाचार के गुण भी देखे जा सकते हैं।

६. हम हमेशा ग्लोबलाइज़ेशन की बात करते हुए कहते हैं कि समूचा जगत एक गांव बन गया है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी अगर कहा जाए कि यह संसार एक वैश्विक गांव (Global Village) की बजाए एक वैश्विक मंडी (Global Market) बन गया है। विज्ञान ने इस कार्य को पूर्ण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि मनुष्य की यातायात एवं संचार साधनों की दूरियों को घटाने में विज्ञान ने महत्त्वपूर्ण योगदान डाला है, किंतु विज्ञान का अपना क्षेत्र है तथा वह सीमित क्षेत्र में रहकर ही कार्य करता है। मनुष्य की शारीरिक ज़रूरतें पूरी करने में विज्ञान का

महत्त्वपूर्ण योगदान है, किंतु मनुष्य की मानसिक तथा आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरा करने का कार्य विज्ञान के वश में नहीं है। जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली इन ज़रूरतों की पूर्ति के अभाव में मन में असंतोष पैदा हो जाता है।

७. समाज में अपना अस्तित्व बचाने के लिए मनुष्य हमेशा प्रयत्नशील रहा है। जब वह सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक शक्ति प्राप्त कर लेता है तो वह दूसरों के अस्तित्व को ख़तरा पैदा कर देता है। अपने बल से वो दूसरों को अपना गुलाम बनाने के प्रयत्न शुरू कर देता है। मनुष्य की यह वृत्ति आदि काल से देखने को मिलती है। हर समय में तथा स्थान पर यह वृत्ति मनुष्य पर हावी होती है। शक्ति प्राप्त करने तथा दूसरों को अपने अधीन करने के ढंग-तरीके बदल गए हैं। किसी समय धर्म इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता था, परंतु मौजूदा समय में राजनीतिक तथा आर्थिक कारण भी इसमें शामिल हो गए हैं। बल की बजाए छल द्वारा दूसरों को काबू करने की वृत्ति हावी हो गयी है, जिसने मानवीय विश्वास को ठेस पहुंचाई है। स्वार्थ के अधीन नज़दीकी दोस्त तथा रिश्तेदार विश्वास तोड़ने एवं दौड़ने में समय बर्बाद नहीं करते। इस वृत्ति ने सामाजिक भाईचारे को भारी ठेस पहुंचाई है।

८. जब किसी बहु-संख्यक समाज, धर्म या भाईचारे में श्रेष्ठता की भावना पैदा हो जाए तो वो अल्प-संख्यकों पर खुद को स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न करता है। उसको अल्प-संख्यक भाईचारे के कार्य-व्यवहार व्यर्थ तथा अपने श्रेष्ठ लगते हैं। अल्प-संख्यकों को जब बहु-संख्यक भाईचारे की इस भावना की समझ पड़ती है तो वे प्रतिक्रिया करते हैं। जब यह प्रतिक्रिया तीक्ष्ण रूप धारण कर ले तो समानता भंग होने लगती है। अल्प-संख्यकों में बेगानगी की भावना पैदा होने पर वे संघर्ष करने तथा टकराव के मार्ग पर चल पड़ते हैं।

९. सामाजिक तथा धार्मिक रूप से मनुष्य ने परमात्मा तथा समाज के साथ समानता पैदा करनी होती है। जब परमात्मा की बजाए किसी अन्य शक्ति में विश्वास पैदा हो जाए तो मन में उस शक्ति को दूसरों पर स्थापित करने की भावना पैदा होती है, जिससे समाज में टकराव की संभावना पैदा हो जाती है। इसी तरह समाज में रहते हुए जब परमार्थ से दूर मन पदार्थ का मार्ग धारण कर लेता है तो कामनाएं तथा लालसाएं पैदा होती हैं। ऐसा नहीं कि लालसाएं पैदा नहीं होनी चाहिए, परमात्मा की बंदगी तथा सामाजिक परोपकार के काम भी प्राय: कामनाओं के अधीन ही किए जाते हैं। स्वार्थ के अधीन कामनाओं की पूर्ति मानवीय वृत्ति को परमार्थ के मार्ग से भटकाकर पदार्थ के अधीन कर देती है। मनुष्य की यह वृत्ति उसको बेईमान, भ्रष्टाचार तथा मनमुखता के मार्ग पर ले जाती है। स्वार्थ के अधीन कार्य करने वाला मनुष्य दूसरों से टूट जाता है और कई बार परिवार तथा समाज में अराजकता पैदा करने का कार्य करता है।

समानता कैसे पैदा हो? समाज में सामाजिक समानता पैदा करने के लिए अनेकों तत्व कार्य करते हैं, परंतु धर्म उनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। धर्म को सही रूप में कैसे समझा जा सकता है या धर्म की सही भावना क्या है तथा उसका सही प्रकटावा किस प्रकार संभव है? श्री गुरु अरजन देव जी ने धर्म की जो परिभाषा बताई है, सिक्ख के लिए धर्म की वही परिभाषा सबसे श्रेष्ठ है। गुरु जी पावन

फरमान करते हैं :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥(पन्ना २६६)

धर्म की इस परिभाषा द्वारा गुरु जी मनुष्य को एक तरफ परमात्मा से जुड़ने तथा दूसरी तरफ ऐसे कार्य करने की प्रेरणा करते हैं जिनमें से सदाचार की भावना प्रफुल्लित होती हो। धर्म की यह परिभाषा दूसरे धर्मों के धर्म-ग्रंथों में भी किसी न किसी रूप में मौजूद है। वो तभी सामने आ सकती है अगर धर्म के विद्वान उसका सही रूप में अध्ययन करके पाठकों तथा आम लोगों तक लेकर जाएं। धर्म-ग्रंथों का निष्पक्ष तथा समय व स्थान की दृष्टि से ऊपर उठकर किया गया अध्ययन धर्म की सही भावना को प्रकट कर सकता है। समूह धर्मों के ग्रंथों में भिन्न-भिन्न समय पर की गई धर्म की व्याख्या को सही रूप में समझने से यह समस्या हल हो सकती है।

समाज को सार्थक रूप से चलाने तथा आगे बढ़ाने में सामाजिक समानता का महत्त्वपूर्ण योगदान है। समाज में सद्भावना तथा समानता तभी कायम रह सकती है यदि मानवीय जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, विनम्रता, सहनशीलता आदि सद्गुणों का विकास हो। यहां गुणों की सांझ वाली कुछ विशेषताएं देखने का प्रयत्न किया जा रहा है।

१. समर्पण : धर्म में विश्वास रखने वाला यह मानता है कि कोई ऐसी बाहरी ताकत या हस्ती इस ब्रह्मांड में मौजूद है जो उसको मुक्ति प्रदान करने के समर्थ है। उसके आगे समर्पण करने से समूह समस्याओं का हल संभव है। श्री गुरु अरजन देव जी मनुष्य को प्रभु-प्रेम प्राप्त करने का मार्ग समझाते हैं कि प्रभु की भावना के आगे समर्पण करने से समूह कार्य सफल हो जाते हैं :

पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥
(पन्ना ६४१)

समर्पण में से समानता की भावना पैदा होती है। समर्पण करने की भावना मनुष्य की इच्छा पर निर्भर करती है। इच्छा ऐसी शक्ति है जो कि मानवीय मन को भटका भी सकती है तथा उसको सीधे मार्ग पर डाल भी सकती है। इच्छा-शक्ति को सीमित कर काबू में लाना कठिन कार्य है किंतु इसको असंभव नहीं माना जा सकता। गुरबाणी मनुष्य को गुरु के समक्ष समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि समर्पण मन ने करना है, शरीर ने नहीं। जब मन गुरु के प्रति समर्पित हो गया तो शारीरिक क्रियाएं भी अपने आप ही दिशा ग्रहण कर लेती हैं। इससे भावार्थ है कि शरीर मन की इच्छाओं के अनुसार कार्य करता है। जैसे किसी बड़ी मशीन को काबू करने के लिए उसके धुरे को काबू करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार शरीर को काबू करने के लिए मन को काबू करना आवश्यक है। मन को काबू करके मनुष्य कठिन से कठिन कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है, अनेकों यातनाएं झेलने की शक्ति उसमें आ जाती है। दुनियावी दुख उसको निराश एवं उदास नहीं करते। मन में पैदा हुई निराशा ताकतवर तथा हृष्ट-पुष्ट मनुष्य को भी कमज़ोर कर देती है। इसके विपरीत पैदा हुई स्थिति कमज़ोर दिखाई देने वाले मनुष्य का मनोबल इतना ऊंचा कर देती है कि वो कठिन से कठिन कार्य करते समय भी ज़रा-सी घबराहट नहीं दिखाता। समर्पण द्वारा अगर मानवीय मन गुरु के शबद के साथ समानता ग्रहण कर ले तो कोई भी कार्य असंभव नहीं लगता।

क्रमशः . . .

गुरबाणी चिंतनधारा : १०६

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोकु म : १ ॥
कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥
कूड़ु सुइना कूड़ु रूपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥
(पन्ना ४६८)

इस सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने संसार की नश्वरता (क्षण भंगुरता) का वर्णन करते हुए यह तथ्य उजागर किया है कि इस नश्वर संसार के समस्त सम्बंध भी छल और प्रपंच मात्र ही हैं। अत: संसार में किससे मित्रता की जाए क्योंकि इस जगत में कुछ भी तो स्थिर अर्थात् सदा कायम रहने वाला नहीं है। दुनिया का छलावा ही दुनिया को डुबा रहा है अर्थात् जीवन मनोरथ को समझे बिना ईश्वर से विहीन होकर झूठ मात्र ही बनकर रह गया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि (यह सारा जगत कपट मात्र है जैसे बाज़ीगर तमाशा दिखाने वाला मदारी जो कुछ खेल दिखाता है वह जादू, छल रूप ही होता है।) इस संसार में सब कुछ मिथ्या है चाहे वह राजा है चाहे प्रजा अर्थात् राजा-प्रजा झूठ है और सारा संसार ही झूठ है। इन राजाओं के महल तथा शामियाने भी झूठ (छलावा) ही हैं तथा इन महलों में बैठने वाले भी झूठे ही हैं। सोना, चांदी (इनसे बने आभूषण) पहनने वाले भी झूठें ही हैं। यह काया (शारीरिक आकार) इनका विलक्षण रूप, सौन्द्रर्य तथा सुंदर वस्त्र सभी मिथ्या ही हैं। पुरुष-स्त्री (इनके सम्बंध) सब छलावा है अर्थात् पति-पत्नी के सम्बंध भी मिथ्या ही है। क्योंकि इन सम्बंधों में भ्रमित हुए जीव भटक रहे हैं।

इस दृश्यमान जगत में प्रपंच में फंसे हुए जीवों का इस छल-कपट से ही मोह पड़ गया है, इस कारण इन्हें परमेश्वर ही भूल गया है अर्थात् जीव अपने जन्मदाता प्रभु को ही विस्मृत कर बैठा है। यहां तक कि जीव छलावे में इतना बेसुध हो गया है कि इसे यह भी ख़्याल नहीं रहता कि यह संसार नश्वर है। कोई भी पूर्णतया साथ निभाने वाला नहीं है। अत: किसी से मोह नहीं डालना चाहिए।

यह भ्रमित संसार सबको शहद जैसा मीठा लग रहा है, यहां यह छल समस्त जीवों को डुबा रहा है। अत: श्री गुरु नानक देव जी उस परमात्मा के चरणों में विनती करते हैं कि हे मालिक! तेरे बिना सब कुछ झूठ ही झूठ है।

उपरोक्त सलोक में इस संसार को एक जादूगर के खेल-तमाशों की तरह झूठा बताया है जैसे एक मदारी जादू का खेल दिखाते हुए कितने रुपये-पैसे, वस्तुएं प्रक्ट कर लेता है लेकिन

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

वास्तव में वे वस्तुएं या रुपये पैसे वास्तविक नहीं होते। उसी प्रकार सांसारिक पदार्थ, रिश्ते-नाते सब कुछ नश्वर हैं, सदा कायम रहने नहीं हैं। लेकिन इस मायावी जाल में ग्रसित जीव कभी वास्तविकता (असलियत) को नहीं पहचानता। इस जीव की भी वही स्थिति है जैसे गुड़ आदि मीठे पदार्थों पर आकर मक्खी बैठ जाती है तथा उसके पंख उसी से चिपक जाते हैं और फिर वह उड़ने की समर्थता खो बैठती है और उसकी जीवन लीला भी वहीं समाप्त हो जाती है। ठीक वैसे ही जीव इन सांसारिक पदार्थों एवं झूठे नातों में इस तरह गलतान हो जाता है कि इसे प्रभु ही भूल जाता है। जीवन दाता परमेश्वर को भुला कर इसके पास पछतावा ही शेष रह जाता है। जैसा कि पावन गुरबाणी का संदेश है :

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
(पन्ना १३५)

माया के भोग्य, पदार्थ क्षण भर में दुखदायी साबित हो जाते हैं, इसलिए गुरबाणी हमें दुनियावी झूठे मोह के बंधनों को छोड़कर अविनाशी प्रभु को हृदय में बसाने की सीख देती है। इस संदर्भ में गुरबाणी का निर्मल उपदेश है :

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
(पन्ना १३३)

म : १ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥
दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥
सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥

इस सलोक में श्री गुरु नानक देव जी इस तथ्य को उजागर करते हैं कि इस जगत की असलियत की पहचान तभी संभवत् है जब हृदय घर में ईश्वर का स्थायी निवास हो जाए, सत्य से साक्षात्कार हो, जिसके फलस्वरूप आत्मिक जीवन जीने की युक्ति समझ में आ जाए और जीव को समस्त विकार एवं कलुषताएं समूल नष्ट हो जाएं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जगत की वास्तविकता को तभी जाना जा सकता है जब हृदय से अस्थिर पदार्थों की जगह सदैव कायम रहने वाला परमेश्वर टिक जाए। जिसके फलस्वरूप छल रूपी माया का प्रभाव हृदय से दूर हो जाता है तथा तन (शरीर) भी मन की तरह साकार हो जाता है। कर्म एवं ज्ञान इंद्रियां बुरी भावना वाले कर्मों से हट जाती हैं तथा शरीर पवित्र हो जाता है। (माया से निर्लेप होकर) जब जीव अपने मूल से जुड़ता है तभी जीव को जीवन की असलियत समझ में आती है। फलस्वरूप परमेश्वर जो कि सत्य-स्वरूप है उसका सच्चा नाम सुनकर हृदय रूपी कमल खिल उठता है और जीव सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है।

सत्य की प्राप्ति तभी मुमकिन है जब जीव

बाहरी शिक्षा (ज्ञान) से परे जीवन मनोरथ को समझे तथा शरीर रूपी भूमि को तैयार करके (विकारों की खरपतवार हटाकर) ईश्वर नाम रूपी बीज बोए। जीवन की हकीकत को तभी समझा जा सकता है जब जीव गुरु से सच्ची शिक्षा प्राप्त करे अर्थात् जब जीव गुरु द्वारा दर्शाये मार्ग पर चलकर अपना जीवन उसकी शिक्षा के अनुरूप बना कर सभी जीवों पर तरस करने की जांच सीखे तथा ज़रूरतमंदों को कुछ दान पुण्य भी करे।

सत्य की परख (परीक्षा) तभी होती है, जब मनुष्य बाहरी तीर्थ-स्थलों को छोड़ अंत: करण के तीर्थ पर सदैव निवास करे; अपने गुरु से उपदेश (शिक्षा) लेकर आत्मा रूपी तीर्थ पर स्थिर (अडोल) बैठा रहे। कहने से तात्पर्य अपने चित को हर पल प्रभु-प्रेम में लीन रखे।

श्री गुरु नानक देव जी अनुनय विनय करते हैं कि जिनके पास सत्य होता है अर्थात् जब हृदय घर में सच्चा प्रभु-परमात्मा बस जाता है, उसके समस्त रोगों का इलाज सच्चा प्रभु आप ही बन जाता है तथा सभी पाप, विकारों, कलुषताओं को धोकर हृदय घर से बाहर निकाल देता है। क्योंकि जहां परमेश्वर का सच्चा नाम है वहां ये विकार टिक नहीं सकते। उन्हें मज़बूरन वह स्थान खाली करना ही पड़ता है।

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह ने सत्य के वास्तविक स्वरूप का निरूपण किया है और कलयुगी जीवों को जीवन की युक्ति सिखलाई है कि किस प्रकार सत्य से साक्षात्कार संभव है। बाहरी क्रिया-कलापों, रस्मी रीति-रिवाज़ों से जीव का उद्धार होने वाला नहीं है; उसके लिए तो अंतर आत्मा की साधना ज़रूरी है जिसका बाहरी दिखावों से कोई सरोकार नहीं है क्योंकि उससे अंतर्यामी प्रभु को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।

मन की साधना एवं नेक कर्म करने की प्रेरणा गुरबाणी में सर्वत्र दृष्टिगत होती है जहां गुरबाणी में अन्यत्र भी यही समझाया गया है कि प्रत्येक जीव को अपने कर्मों का फल हर हाल में भोगना पड़ता है। अत: जीव को बीज श्रेष्ठ बोने चाहिए ताकि श्रेष्ठ फल की प्राप्ति हो। इस लिए गुरबाणी में जीव को समझाया गया है यह धरती कर्मभूमि है इसमें जैसा बीज बोओगे ईश्वर के अटल नियमानुसार वैसे ही फल का निर्माण होगा अगर कोई विष बोकर अमृत की अभिलाषा रखता है तो यह मुमकिन नहीं है, जैसा कि लोक प्रचलित कहावत है :- बोए पेड़ बबूल के तो आम कहां से होए।

इस लिए गुरबाणी में समझाया गया है कि जीव को अपने अंतर्मन से प्रश्न करना है कि जब से इस जगत में आए हो तब से क्या कर्म किया है (जो ईश्वर की दरगाह में काम आयेगा) जैसा कि अनंद साहिब की पावन बाणी है :

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥
कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ *(पन्ना ९२२)*

साथ ही जीव को गुरबाणी में सुचेत किया गया है कि यह तो कर्म भूमि है और यहां पर जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे यथा :

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
(पन्ना १३४)

अत: गुरबाणी में बड़ा सुंदर समझाया है :

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ *(पन्ना ४७४)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी सृष्टि के प्रत्येक जीव को यही पावन उपदेश

देती है कि समस्त धर्मों की श्रेष्ठता इसी में है कि उसे मानने वाले मुख से परमेश्वर का नाम जपें तथा हाथ-पैरों से निर्मल कर्म करें। अत: अठसठ तीर्थों के स्नान, समस्त पुण्य-कर्म एवं जीव दया आदि कर्म सत्य मार्ग के अंतर्गत ही आ जाते हैं यथा :

अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
(पन्ना १३६)

अकाल पुरख के चरणों में अरदास करें कि हम मन-वचन-कर्म से नेक कर्म करते हुए यह दुर्लभ मानव जीवन सफल बना सकें क्योंकि कर्मों से यह मनुष्य जीवन मिला है उसकी नदर (दया-दृष्टि) से मुक्ति संभव है। गुरबाणी आशयानुसार :

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥
(पन्ना २)

पउड़ी ॥
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥
कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥
फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥
(पन्ना ४६८)

इस पउड़ी में भी गुरु पातशाह जी ने सत्य मार्ग पर चलने वाले संत जनों की चरण धूलि को मस्तक पर लगाने की भावना को अभिव्यक्ति दी है और समस्त लालच छोड़कर हृदय को प्रभु चरणों में जोड़ने की हिदायत दी है। लेकिन यह भी समझाया है कि यह सब कुछ तभी मुमकिन है अगर ईश्वर की रहमत हो अन्यथा अपनी तुच्छ बुद्धि के पीछे लग कर किए गए समस्त क्रिया-कलाप व्यर्थ ही जाते हैं। श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि मुझे संत पुरुषों के गुणों की धूल नसीब हो तो मैं उसे मस्तक पर लगाऊं (और यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि मुझे संत जनों की चरण-धूल मिले ताकि मैं उसे अपने मस्तक से लगाकर अपना जीवन सफल बना सकूं) क्योंकि संत जनों की चरण धूलि हमारे लिए बहुत बड़ा दान है। (जो किसी भाग्यशाली को ही नसीब होती है।)

समस्त लालच जो मनुष्य को भ्रमित करते हैं, उन्हें छोड़कर अर्थात् झूठे लालच छोड़कर मन को केवल अकाल पुरख परमेश्वर के चरणों में लगाना चाहिए। क्योंकि जीव जिस तरह के कर्म करता है (कुदरत के अटल नियम के अनुसार) उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। लेकिन संत जनों की चरण-धूलि तभी प्राप्त होती है अगर जीव के पूर्व में ही अच्छे भाग्य हो अर्थात् पूर्व जन्म की नेक कमाई से ही संत पुरुषों की संगत एवं चरण-धूलि नसीब होती है। अल्प एवं तुच्छ बुद्धि की बदौलत की गई कठिन कमाई भी व्यर्थ चली जाती है। क्योंकि अहंकार वश की गई समस्त साधना व्यर्थ ही जाती है।

उपरोक्त पउड़ी में चरण-धूलि का वर्णन है जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी अनेक स्थानों पर सुशोभित है। शबद गुरु में चरण-धूलि का आशय विनम्रता से है जहां अहंकार सूक्ष्म अथवा स्थूल किसी भी रूप में शेष न रहे। अकाल पुरख परमेश्वर का नाम तथा अहंकार एक स्थान पर रह नहीं सकते चिंतकों के चिंतनानुसार हृदय घर में नाम तभी टिक सकता है जब अहंकार लुप्त हो जाए। संत जनों की चरण-धूलि से भाव सतसंगत में आना, बाणी का ईश्वरीय पैगाम समझकर पढ़ना, सुनना, विचार करना तथा अमल में लाना

अर्थात् बाणी के अनुसार जीवन बनाना। किसी भी प्राप्ति का अहंकार न करके ईश्वर द्वारा प्राप्त उस विशेष गुण, ज्ञान, अथवा पदार्थों के लिए कृतज्ञता का भाव जागृत होना और उस परम पिता परमेश्वर का हृदय घर से शुक्राना करना। जैसा कि पावन बाणी में अन्यत्र समझाया गया है :

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ (पन्ना ४)

अर्थात् दुनियावी प्राप्तियां तुच्छ हैं और उससे प्राप्त मान-सम्मान भी तुच्छ मात्र है। लेकिन जिस जीव ने ईश्वर को अंत:करण में बसाया, जिसके फल स्वरूप समस्त विकारों की मैल उतर गई यही असली साधना है यथा गुरबाणी प्रमाण है :

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥
(पन्ना ६८७)

अत: जीव को हर पल उस परमेश्वर का शुक्राना इस लिए करना है कि सब गुण प्रभु द्वारा बख़्शे हुए हैं जैसा कि भाई गुरदास जी का कथन है :

सभ अवगुण मै तनि वसनि गुण कीते अवगुण नो धावै ॥ (वार ६:२०)

इस संदर्भ में अगर हम थोड़ा-सा भी विचार करें तो हमारा अहंकार स्वत: ही धराशाही हो जायेगा। अगर हम सच्चे दिल से यह अटल सच्चाई मानते हैं कि सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ है उसके हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता और उसकी रहमत हो जाए तो वह बिना श्वास के भी रख सकता है जैसा कि पावन बाणी का फरमान है सुखमनी साहिब में पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं :

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ (पन्ना २७७)

वैसे भी सब कुछ उस परमेश्वर का बख़्शा हुआ है तो जीव रूप का, धन-संपदा का, शूरवीरता का अथवा दान आदि का अभिमान क्यों कर रहा है ? वास्तव में गुरबाणी आशयानुसार वही व्यक्ति निरोग है, जिसका गुरु-कृपा से अहंकार का रोग दूर हो गया है। सुखमनी साहिब में यह तथ्य भी उजागर किया गया है। यथा :

रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥ (पन्ना २८२)

अत: इस कलयुगी पसारे में प्रत्येक जीव को उस रहमतों के सागर दयालु प्रभु के चरणों में नित्य अरदास करनी चाहिए कि हम कलयुगी जीवों को हउमै जैसे दीर्घ रोग से आप ही बचा कर रखो। ताकि दयालु, कृपालु प्रभु हमें अपने दर से नाम-दान जो कि सर्वोत्तम दान माना गया है, बख़्शकर हमारा लोक-परलोक सफल बना दे। क्योंकि वह परमेश्वर तो जैसी इच्छा वैसी का पूरक है हमें ही अपनी मनोवृत्तियों को गुरबाणी आशयानुसार बनाने की आवश्यकता है। 

ख़बरनामा

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अपमान बर्दाशतयोग्य नहीं : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ३ सितंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने क्षेत्र श्री हरिगोबिंदपुर, ज़िला गुरदासपुर का गांव कीड़ी अफ़गाना में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन अंगों (पन्नों) का अपमान और तरनतारन साहिब के गांव डिबीपुर के गुरुद्वारा साहिब में गुटका साहिब के अंग फाड़ने की घिनौनी घटना को निंदनीय करार देते हुए प्रशासन से दोषियों को शीघ्र गिरफ्तार करने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि पंजाब का सारा प्रशासन अपनी ज़िम्मेदारी में किसी प्रकार की आनाकानी न करे। उन्होंने पंजाब सरकार से भी अपील की है कि दिन-ब-दिन हो रही ऐसी घटनाएं दुखदायी हैं और बर्दाश्त से बाहर हैं। यह गंभीर एवं चिंताजनक मामला है, जिसमें विशेष रूप में ध्यान देने की आवश्यकता है।

यहां से प्रेस विज्ञप्त में उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी सांझीवालता एवं सरबत्त के भले का संदेश देती हैं किंतु कुछ सिरफिरे व्यक्ति बार-बार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अपमान कर देश की अमन-शांति को भंग करना चाहते हैं, जिसको कभी भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इन घटनाओं से देश-विदेश में बैठे समूह सिक्ख समुदाय के लोगों में रोष एवं आक्रोश पाया जा रहा है। उन्होंने प्रशासन से अपील की है कि वे इस घटना की गहनता से जांच करते हुए दोषियों के खिलाफ़ कानून के अनुसार सख़्त से सख़्त कार्यवाही करें। उन्होंने समस्त सिक्ख संगत को सद्भावना बनाए रखने की भी अपील की है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने तरनतारन साहिब के गांव खारा इट्टां वाला के गुरुद्वारा साहिब में अपरिचित चोरों द्वारा चोरी के दौरान सेवादार को ज़िंदा जलाने की घटना को मंदभागी बताया है। उन्होंने कहा कि पंजाब के हालात बद से बदत्तर हो गए हैं और ऐसी घिनौनी कार्यवाहियों को अंज़ाम देने वाले शरारती अनसरों को कानून की कोई परवाह नहीं रही, जो कि गहरी चिंता का विषय है। उन्होंने सरहाली एवं तरनतारन साहिब पुलिस को इस घिनौनी घटना के दोषियों को फौरन गिरफ़्तार करके सख़्त से सख़्त सज़ा देने की मांग की है।

कनाडा के क्यूबेक की सुप्रीम कोर्ट द्वारा सिक्खों को हैलमेट पहनकर काम पर जाने का फैसला निराशाजनक : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २४ सितंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने कनाडा के क्यूबेक की सुप्रीम कोर्ट द्वारा तीन सिक्ख ड्राइवरों को काम पर हैलमेट पहनकर जाने और किसी किस्म की छूट न देने के फैसले को निराशाजनक बताया है।

यहां से जारी प्रेस विज्ञप्त में क्यूबेक सुपीरियर अदालत के जज आंदरे प्रोवोसट को अपने फैसले पर पुन: विचार करने को कहते हुए कहा कि दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

ने पांच ककारों के अतिरिक्त खालसा पंथ को दसतार की दात बख़्शिश कर एक अलग एवं विलक्षण पहचान दी है। उन्होंने कहा कि कलगीधर दशमेश पिता ने जहां सिक्खों को साबत सूरत रहने के लिए प्रेरित किया, वहां अपने केशों की संभाल करने और दसतार सजाने के लिए भी उपदेश दिया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख धर्म में दसतार की विशेष महत्ता है। उन्होंने कहा कि हैलमेट सिक्खों के केशों पर फिट नहीं बैठती, इस लिए सिक्खों को दसतार सजाने के लिए कनाडा सरकार को विशेष छूट देनी चाहिए; जिन्होंने कनाडा के इतिहास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि कनाडा की नई बनी टरूडो सरकार में सरदार हरजीत सिंघ सज्जण को रक्षा मंत्री बनाया गया है, इनके अतिरिक्त बहुत-से पंजाबी भी शामिल हैं, इसके बावजूद क्यूबेक की अदालत द्वारा सिक्खों के खिलाफ़ ऐसा फैसला निंदनीय है।

उन्होंने कहा कि बरतानिया सरकार द्वारा सिक्खों को दसतार सजाकर काम पर आने की अनुमति दी गई है, जो कि सिक्ख पंथ के लिए बहुत सम्मान की बात है। उन्होंने कनाडा की सरकार से अपील की है कि वह काम करने वाले सिक्खों के लिए दसतार सजाने को यकीनी बनाएं।

अफगानिस्तान में सिक्ख की हत्या करने वाले दोषियों को शीघ्र गिरफ्तार किया जाए : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ३ अक्तूबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने पाकिस्तान के साथ लगते अफगानिस्तान के सरहदी सूबा नंगारहर में कुछ शकी आतंकवादियों द्वारा एक सिक्ख को उसके घर से अगवा करके गोलियां मार कर हत्या करने की घटना को निंदनीय बताया है और दोषियों को शीघ्र ही गिरफ्तार करने की मांग की है।

यहां से जारी प्रेस विज्ञप्त में उन्होंने कहा की अफगानिस्तान में अल्प संख्यक सिक्खों के साथ हो रही ज्यादतियां दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। इससे पहले काबुल में हिकमत का काम करने वाले सरदार जगतार सिंघ नामक अफगानी सिक्ख को शरारती अनसरों ने उसकी दुकान पर उसकी गर्दन पर चाकू रखकर इस्लाम धर्म कबूल करने के लिए मज़बूर करने हेतु जान से मारने की धमकी दी थी, जिसके संबंध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के द्वारा भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को पत्र लिखकर सिक्खों की सुरक्षा संबंधी अपील की गई थी। उन्होंने कहां कि यहां पर पहले भारी संख्या में सिक्ख समुदाय के लोग रहते थे परंतु अब यह संख्या कम होकर ५ हज़ार रह गई है, जिसके मुख्य कसूरवार फिर्कू भावनाओं को अंज़ाम देने वाले लोग हैं।

उन्होंने भारत सरकार से अपील की है कि वह अफगानिस्तान में डर के माहौल में ज़िंदगी बसर कर रहे अल्प संख्यक सिक्खों की जान-माल की सुरक्षा हेतु कदम उठाए जाएं, जिन पर प्रतिदिन जुल्म किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान में सिक्खों की सुरक्षा को यकीनी बनाने के ठोस प्रयत्न किए जाएं ताकि अल्प संख्यकों के साथ भेदभाव, घृणा, नफ़रत आदि हमलों पर अंकुश लगाया जा सके।